कमल संदेश
ikf{kd if=dk

संपादक

प्रभात झा, सांसद

कार्यकारी संपादक

डॉ. शिवशक्ति बक्सी

संपादक मंडल

सत्यपाल
संजीव कुमार सिन्हा

कला संपादक

धर्मेन्द्र कौशल
विकास सैनी

सदस्यता शुल्क

वार्षिक : 100/-
त्रि वार्षिक : 250/-

संपर्क

lnL;rk : +91(11) 23005798
Qku (dk-) : +91(11) 23381428
QDl : +91(11) 23387887

ई-मेल

kamalsandesh@yahoo.co.in

प्रकाशक एवं मुद्रक : डा. नन्दकिशोर गर्ग द्वारा डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, के लिए एक्सेलप्रिंट, सी-36, एफ.एफ. कॉम्पलेक्स, झण्डेवालान, नई दिल्ली-55 से मुद्रित करा के, डा. मुकर्जी स्मृति न्यास, पी.पी-66, सुब्रमण्यम भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003 से प्रकाशित किया गया। सम्पादक - प्रभात झा

विषय-सूची

कर्नाटक के राज्यपाल श्री हंसराज भारद्वाज को वापस बुलाये जाने की मांग संबंधी ज्ञापन राष्ट्रपति को सौंपने के बाद प्रेस को सम्बोधित करते भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी

भट्टा परसौल में किसान आंदोलन
मांगा हक, मिली गोलियां..... 7

कर्नाटक प्रकरण
कानूनविद् भारद्वाज ने कानून की उड़ाई धज्जियां..... 8
एनडीए का प्रधानमंत्री को ज्ञापन..... 9

लेख
संप्रग अब चुनौतियों के घेरे में
&v#.k tVyh..... 12
कांग्रेस के लिये थोड़ी खुशी, ज़्यादा गम
&vEck pj.k of'k"B..... 24

पेट्रोल मूल्य वृद्धि
भाजपा का देशव्यापी आन्दोलन..... 16

अन्य
यूपीए ने मनाया विफलताओं और अक्षमताओं का जश्न..... 20
भारतीय जनता मजदूर महासंघ की राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक..... 22
भाजपा राष्ट्रीय प्रशिक्षण प्रकोष्ठ की कार्यशाला..... 23
भाजपा विधि एवं विधायी प्रकोष्ठः अधिवक्ता सम्मेलन..... 27
डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान..... 28
निवेशक प्रकोष्ठ..... 28

अटलजी की कविता

अब तक जिस जग ने पग चूमे
आज उसी के सम्मुख नत क्यों?
गौरव–मणि खो कर भी मेरे
सर्पराज आलस में रत क्यों?
गत गौरव का स्वाभिमान ले
वर्तमान की ओर निहारो,
जो जूठा खाकर पनपा है
उसके सम्मुख कर न पसारो।
हम अपने को ही पहचानें,
आत्मशक्ति का निश्चय ठानें,
पड़े हुए जूठे शिकार को
सिंह नहीं जाते हैं खाने।
एक हाथ में सृजन,
दूसरे में हम प्रलय लिए चलते हैं,
सभी कीर्ति ज्वाला में जलते,
हम अंधियारे में जलते हैं।
आंखों में वैभव के सपने,
पग में तूफानों की गति हो,
राष्ट्रभक्ति का ज्वार न रुकता,
आए जिस–जिस में हिम्मत हो।

व्यंग्य चित्र

हमें लिखें...

सम्पादक के नाम पत्र

कमल संदेश

lknj vkeaf=r

आपकी राय एवं विचार

सम्पादक,
कमल संदेश
डॉ. मुकर्जी स्मृति न्यास, पीपी-66
सुब्रह्मण्य भारती मार्ग, नई दिल्ली-110003
ई-मेल:
kamalsandesh@yahoo.co.in

भूल सुधार

कमल संदेश मई 16–31, 2011 में आगरा में आयोजित महासंग्राम रैली के निमित प्रकाशित समाचार के अन्तिम पैरा में सम्पादन त्रुटि रह गई है। इसे निम्न प्रकार पढ़ें– "बसपा के शासन काल में ही दलितों को सबसे अधिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा।"

यूपीए ने दी महंगाई एवं भ्रष्टाचार की सौगात

कांग्रेसनीत यूपीए–2 के दो वर्ष बीत गए। डॉ. मनमोहन सिंह और यूपीए की अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी ने अपने ही हाथों अपनी पीठ थपथपा ली। देश में एक दशक से एक नई परम्परा चल पड़ी है कि अगर आपकी कोई प्रशंसा नहीं कर रहा हो तो विज्ञापन छपवा लें। होर्डिंग्स लगवा लें। अपनी प्रशंसा, अपने सरकार की प्रशंसा सरकारी पैसों से करवा लें। अच्छे कार्य को कभी किसी शाबासी का मोहताज नहीं होना पड़ता। देश की जनता स्वयं बोलने लगती है। आज जब यूपीए–2 अपने दो वर्ष पूरे कर रहा है तो देश की जनता मौन है। वह बांट जोह रही है कि कब आए सन् 2014, जब लोकसभा के चुनाव हों और इस यूपीए सरकार के खिलाफ आम जनता अपना जनादेश दे और कहे 'भ्रष्टाचारियों कुर्सी छोड़ो, जनता आती है'।

भ्रष्टाचार करने देना। भ्रष्टाचारियों को बचाना। कुर्सी के लिए देश की अस्मिता के साथ खिलवाड़ करना। क्या इन सभी बातों पर देश विचार नहीं कर रहा होगा। डॉ. मनमोहन सिंह चाहे जितनी सफाई दे। देश अब कहने लगा है कि डॉ. मनमोहन सिंह के आंखों के सामने जो भ्रष्टाचार हुए हैं, उसमें वे भी उतने ही दोषी हैं जितने ए. राजा और कलमाड़ी। क्या इन दोनों द्वारा किए जा रहे गुनाहों से देश के प्रधानमंत्री अनभिज्ञ थे? क्या किसी प्रधानमंत्री को ऐसे व्यक्तियों को संरक्षण देना चाहिए?

यूपीए के दूसरे कार्यकाल का एक–एक दिन काले दिन के रूप में बीता है। कांग्रेस चाहे जितनी सफेद बातें करे, पर सच्चाई यही है कि गत दो वर्षों में जो कुछ खोया है वह गत 60 वर्षों में नहीं खोया। कांग्रेस नेतृत्वहीन हो चुकी है। कांग्रेस जिसे नेतृत्व कहती है, वह सत्ता की शील खो चुकी है। सौ दिन के भीतर महंगाई कम करने की बात कहने वाली कांग्रेस की गलत नीतियों के कारण समूचा देश महंगाई की गिरफ्त में है। महंगाई की चपेट से सारा देश कराह रहा है। भ्रष्टाचार की कहानियां आम बात हो गई हैं।

यूपीए के दूसरे कार्यकाल में देश के सामने यह सच्चाई भी आ गई है कि कांग्रेस की रहनुमा मां और बेटे दोनों की चमक और धमक जनता में लेशमात्र भी नहीं बची है। बिहार की राजनैतिक मार, जो कांग्रेस के गाल पर पड़ी है, वह उससे अभी तक उबर नहीं पायी है। कांग्रेस बिहार में चार सीटों पर आ गई है। कांग्रेस मध्यप्रदेश, गुजरात, बिहार, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, झारखंड सहित अनेक प्रांतों में नेतृत्वहीन हो चुकी है। इन राज्यों में कांग्रेस अस्ताचल की ओर ही नहीं है बल्कि जो दल इन राज्यों में सत्ता में है, उनकी चमक और बढ़ रही है। आज कोई प्रधानमंत्री से पूछे कि गत दो वर्षों में आतंकवादी गतिविधियों पर कोई नियंत्रण हुआ है, कांग्रेस उत्तर देने की स्थिति में नहीं है? यूपीए की दयनीय हालत का वर्णन तो स्वयं प्रधानमंत्री ने इलेक्ट्रानिक मीडिया के सामने बखान किया और कहा कि ''मैं मजबूर हूं''। इस वाक्य से स्वयं अंदाजा लगाया जा सकता है कि हमने देश किस व्यक्ति के हाथों में दिया है। आज भारत के किसी भी

नागरिक को यह कहने में गर्व महसूस नहीं हो रहा कि हमारे प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह हैं। इससे अधिक शर्मनाक घटना और क्या हो सकती है। महंगाई का मुद्दा हो, पूर्वोत्तर के राज्यों का मामला हो, या फिर देश की आंतरिक सुरक्षा का मामला हो या फिर विदेश नीति का सवाल हो, कांग्रेस हर मोर्चे पर फेल है। हां, यह जरूर कहा जा सकता है कि हर मोर्चे पर फेल होने के बाद भी यूपीए कुर्सी बचाने में सफल रही है?

यहां यह लिखने में कोई संकोच नहीं है कि आज कांग्रेस आम चुनाव करवा ले तो वह चारों खाने चित्त गिरेगी पर कांग्रेस ऐसा करेगी कहां? कांग्रेस का तो लोकतंत्र से विश्वास उठ चुका है और यही कारण है कि गत दो वर्षों में कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार के कार्यकाल में ''संसद ठप्प'' रहा। भ्रष्टाचार पर बहस नहीं करवाने वाली मंशा को लेकर चलने वाली कांग्रेस ने कुर्सी के खातिर वतन को दांव पर लगा दिया।

यूपीए के दूसरे कार्यकाल का दौर जनमानस में राजनीति और राजनीतिज्ञों के प्रति अनास्था पैदा करने वाला रहा है। देश को आज एक मध्यावधि चुनाव की आवश्यकता है, क्योंकि जनमानस का जिस सरकार पर से विश्वास उठ चुका है ऐसी सरकार को सत्ता में बने रहने का कोई अधिकार नहीं है। काश! कांग्रेस–नीत यूपीए जनमानस को समझने का प्रयत्न करती। खैर, बकरी की मां कब तक खैर मनायेगी आज नहीं तो कल...! ■

कर्नाटक उपचुनाव में भाजपा ने छीनी तीनों सीटें

कर्नाटक विधानसभा उपचुनाव में भाजपा ने अपने जीत का परचम फिर से लहराया। 9 अप्रैल को हुए उपचुनाव में भाजपा ने तीनों विधानसभा सीट पर जीत हासिल की। गत 13 मई को आये परिणाम कांग्रेस और जनता दल (सेक्यूलर) की कर्नाटक सरकार को अस्थिर करने के प्रयास को जनता का करारा जवाब था। इसमें से भाजपा ने दो सीट कांग्रेस और एक सीट जनता दल (सेक्युलर) से छीनी। भाजपा के श्री सी.पी. योगेश्वर चेन्नापटना विधानसभा सीट से 12,000 वोटों से जीते। भाजपा के ही श्री एस.वी. रामचंद्रन ने जगलपुर सीट से 4,433 वोटों से जीत हासिल की और श्री एम. नारायणस्वामी बागरपेट से 4,044 वोट से जीत हासिल की।

पहली बार भाजपा ने चन्नापटना सीट जनतादल (सेक्युलर) से छीनी।

बस्तर लोकसभा उपचुनाव में भाजपा की शानदार जीत

छत्तीसगढ़ के बस्तर लोकसभा के लिए हुए उपचुनाव में भाजपा के प्रत्याशी दिनेश कश्यप ने अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी कांग्रेस उम्मीदवार को 88,884 वोटों से पराजित किया। यह सीट भाजपा सांसद श्री बलिराम कश्यप के निधन से खाली हुई थी। ■

विजयी प्रत्याशी मतदाताओं के विश्वास पर खरे उतरें : भाजपा

भाजपा संसदीय बोर्ड की बैठक में 13 मई को पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों पर विचार विमर्श हुआ। इस सम्बन्ध में जारी प्रेस वक्तव्य इस प्रकार है :

भाजपा का मानना है कि प्रत्येक विधानसभा के परिणाम उस राज्य की विशेष स्थिति के अनुसार है।

पश्चिम बंगाल में वास्तविक विकास के अभाव के कारण सरकार–विरोधी तत्वों ने काम किया। तमिलनाडु में भ्रष्टाचार और पारिवारिक भाई–भतीजावाद ने चुनाव परिणामों को प्रभावित किया।

भाजपा को खेद है कि विपक्षी दलों की एकजुटता न होने के कारण असम में एक विश्वसनीय विकल्प नहीं उभर पाया। लगता है कि मार्क्सवादी विचारधारा का वैश्विक पतन भारत में काफी देर से आया है। भाजपा के छत्तीसगढ़ और कर्नाटक के उप–चुनावों के परिणाम संतोषजनक रहे हैं। भाजपा प्रत्येक राज्य में चुनाव में विजयी रहने वाले प्रत्याशियों को बधाई देती है और उम्मीद करती है कि वे मतदाताओं के विश्वास पर खरे उतरेंगे। ■

मांगा हक, मिली गोलियां

भाजपा नेताओं ने उपवास कर जताया विरोध

उत्तर प्रदेश की मायावती सरकार अन्नदाता किसानों पर जुल्म ढा रही है। भूमि अधिग्रहण के मसले पर सरकार की नीतियों का विरोध कर रहे किसानों पर गोलियां बरसाई गईं, महिलाओं के साथ छेड़छाड़ की गई, बड़ी संख्या में किसान गायब हो गए। केन्द्र सरकार और राज्य सरकार का दायित्व बनता है कि किसानों के हितों की रक्षा करे लेकिन वे चुप्पी साधे हुए हैं। गौरतलब है कि उत्तर प्रदेश के ग्रेटर नोएडा स्थित भट्टा परसौल गांव में 7 मई को यमुना एक्सप्रेस वे के निर्माण के लिए भूमि अधिग्रहण के खिलाफ आंदोलनरत् किसानों और पुलिस के बीच हिंसक संघर्ष हुआ, जिसमें चार लोगों की मौत हो गई। इस संघर्ष में दो पुलिसकर्मियों समेत चार लोगों की मौत भी हुई। किसानों पर हुए इस अत्याचार के विरोध में भट्टा परसौल गांव एवं गौतमबुद्ध नगर में जगह–जगह किसानों ने भूमि अधिग्रहण के खिलाफ आंदोलन किया और काली पट्टी बांध कर जिलाधिकारी कार्यालय के सामने प्रदर्शन किया।

गत 12 मई, 2011 को भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व सांसद श्री राजनाथ सिंह अम्बेडकर पार्क में 24 घंटे के उपवास पर बैठे। उनके साथ प्रमुख नेतागण भी पहुंचे। श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि प्रदेश की माया सरकार के राज में प्रदेश में गुंडा राज चरम सीमा पर है, अपराधियों के हौंसले बुलन्द है। सरेआम हत्या, लूट–पाट और डकैतियों से आम नागरिक का जीना मुश्किल हो गया है। भ्रष्टाचार चरमसीमा पर है। किसानों की भूमि का जबरन अधिग्रहण किया जा रहा है। किसान, गरीब व मजदूर वर्ग का जीवन दूभर हो गया है। श्री सिंह ने कहा कि उत्तर प्रदेश में अगर भाजपा की सरकार बनी तो माया सरकार के सभी काले कारनामे व कालेधन की जांच एक कमीशन बना कर होगी।

राज्य सभा में विपक्ष के नेता श्री अरूण जेटली ने कहा कि कांग्रेस और बसपा भ्रष्टाचार के मुददे पर एक साथ है। उन्होंने कहा कि मायावती के सरकार के कुशासन का हाल यह है कि गरीब किसान भाइयों की भूमि को जबरदस्ती अधिग्रहण किया जा रहा है उन किसान भाइयों को उनकी भूमि का पर्याप्त मुआवजा भी नही दिया जा रहा है बल्कि किसानों पर गोली चलाई जा रही है। उन्होंने कहा कि बसपा 2जी स्पैक्ट्रम घोटाले में कांग्रेस का साथ देकर केन्द्र की यूपीए सरकार को बचा रही है।

अनशन स्थल से पुलिस प्रशासन ने श्री राजनाथ सिह सहित राज्यसभा में विपक्ष के नेता, श्री अरूण जेटली, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री मुख्तार अब्बास नकवी, राष्ट्रीय सचिव श्री अशोक प्रधान, प्रदेश अध्यक्ष श्री सूर्य प्रताप शाही, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डा0 रमापति राम त्रिपाठी, पूर्व सांसद व जडयू के राष्ट्रीय महासचिव श्री के0सी त्यागी, किसान मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश धनखड़, महामंत्री श्री नरेश सिरोही, राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी श्रीकांत शर्मा, श्री सिद्धार्थ नाथ सिंह को गिरफ्तार कर लिया।

इनके अतिरिक्त प्रदेश उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र सिंह, श्रीमती लज्जो रानी गर्ग, श्री विरेन्द्र सिंह सिरोही, प्रदेश मंत्री श्री पंकज सिंह, महापौर श्रीमती दमयन्ति गोयल, क्षेत्रीय अध्यक्ष सत्यप्रकाश अग्रवाल, क्षेत्रीय मंत्री भूपेन्द्र सिंह, विधायक सुनील शर्मा, जिलाध्यक्ष डा0 प्रेमचन्द सिंह महानगर अध्यक्ष मोहन शर्मा, पूर्व महानगर अध्यक्ष, श्री अशोक मोगा, अतुल गर्ग, अशोक गोयल, नंद किशोर गुर्जर, श्री संजीव शर्मा, श्री पप्पू पहलवान, श्री महेन्द्र नागर, विजय मोहन सहित हजारों की संख्या में पार्टी कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। नेताओं की गिरफ्तारी के बाद भी भाजपा के अन्य कार्यकर्ता धरना स्थल पर धरना जारी रखे हुए हैं।

श्री सूर्य प्रताप शाही ने राजनाथ सिंह सहित बडे नेताओं की गिरफ्तारी की कडी निंदा करते हुए कहा कि कल पार्टी पूरे प्रदेश में जिला मुख्यालयों पर भूख हड़ताल कर इसका विरोध करेगी।■

कानूनविद् भारद्वाज ने कानून की उड़ाई धज्जियां

भारतीय संविधान में राज्यपाल का कार्य भले ही यह बताया गया हो कि वह निष्पक्ष और दलगत राजनीति से परे रहें परन्तु कांग्रेस तो संवैधानिक संथाओं में आस्था रखती नहीं। इसलिए जब भी कांग्रेस नेताओं को राज्यपाल बनने का मौका मिलता है तो वह पार्टी एजेंट की भूमिका का निर्वाह करते हुए गैर कांग्रेसी शासन को अस्थिर करने में जुट जाते हैं। ऐसा ही कुछ कर्नाटक में हो रहा है, जो भाजपा शासित है। काफी समय से राज्यपाल श्री हंसराज भारद्वाज राज्य में अस्थिरता का वातावरण बनाने में जुटे हैं। पिछले दिनों श्री भारद्वाज ने केन्द्र सरकार से मुख्यमंत्री श्री बीएस येद्दयुरप्पा के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार को बर्खास्त कर राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू किए जाने की सिफारिश की। भाजपा ने इसका जबरदस्त विरोध किया। कानूनविदों ने भी राज्यपाल के कदम को संविधानविरोधी बताया। राज्यपाल की सिफारिश को बेबुनियाद बताने के लिए मुख्यमंत्री श्री बीएस येदियुरप्पा और उनके सभी 121 विधायकों ने 17 मई को राष्ट्रपति के सामने परेड की। यह दिखाने के लिए कि वो पूर्ण बहुमत से सरकार चला रहे हैं, राज्यपाल जो कुछ भी कह रहे हैं, वो पूरी तरह असंवैधानिक है और तथ्यरहित है। इस दौरान भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी, लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज और राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली भी उपस्थित थे। केंद्र सरकार ने कर्नाटक के राज्यपाल हंसराज भारद्वाज को जबरदस्त झटका देते हुए राज्य में राष्ट्रपति शासन लागू किए जाने की सिफारिश को खारिज कर दिया। भारतीय जनता पार्टी ने मांग की है कि केन्द्र सरकार राज्यपाल श्री भारद्वाज को वापस बुलाए और जब तक यह मांग पूरी नहीं होती है वह चैन से नहीं बैठेगी। मुख्यमंत्री श्री येदुयुरप्पा द्वारा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी के नेतृत्व में राष्ट्रपति को भी ज्ञापन सौंपा गया।

कर्नाटक में राज्यपाल श्री हंसराज भारद्वाज द्वारा भेजी गई रिपोर्ट जिसमें राष्ट्रपति शासन लगाने की अवैधता किसी से छुपी नहीं है। इस विषय पर 16.5.2011 को एनडीए ने एक ज्ञापन प्रधानमंत्री को सौंपा है, जिसका हिन्दी भावानुवाद सुधि पाठकों के लिए प्रस्तुत है–

एनडीए का प्रधानमंत्री को ज्ञापन

डा. मनमोहन सिंह,
भारत के माननीय प्रधानमंत्री
7, रेसकोर्स रोड, नई दिल्ली–110001

प्रिय प्रधानमंत्री जी,

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की ओर से कर्नाटक के राज्यपाल द्वारा की जा रही भारी संवैधानिक अनौचित्यताओं के संदर्भ में हमें आपके पास पहुंचने को विवश होना पड़ा है। जब से श्री एच.आर. भारद्वाज को राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया गया है, तभी से वह एक के बाद एक विवाद पैदा करने की कोशिश करते रहे हैं। वह सार्वजनिक रूप से एक पार्टी विशेष के अपने प्रभाव की घोषणा भी करते रहे हैं। उनके वक्तव्यों से साफ संकेत मिलता है कि वह राजनीतिक रूप से अलग नहीं है और न हो सकते हैं।

अक्तूबर 2010 में श्री भारद्वाज ने संविधान के अनुच्छेद 356 के अंतर्गत राष्ट्रपति शासन लगाने की सिफारिश की थी। सिफारिशों के बारे में केन्द्र सरकार की सतर्कता रही थी और इसलिए अंततः राज्यपाल की सिफारिश नहीं मानी गई। तभी से राज्य सरकार की लोकप्रियता में कहीं कोई संदेह नहीं रहा है। श्री बी.एस. येदियुरप्पा के नेतृत्व में भाजपा ने लगभग सभी उप चुनावों, म्युनिसिपिल चुनावों और पंचायती चुनावों में भरपूर विजय हासिल की है। 16 विधायकों की अयोग्यता के बाद सदन की प्रभावी संख्या 207 है। 13 मई 2011 को भाजपा के पास सदन की 207 संख्या में 110 विधायकों का समर्थन प्राप्त है।

13 मई 2011 को विधायकों की अयोग्यता के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने जजमेंट की घोषणा की। कर्नाटक विधानसभा के माननीय स्पीकर का मत था कि विधायकों के दो सैट (संख्या में 16) अयोग्य थे। 11 विधायकों को भाजपा की सदस्यता छोड़ने के आधार पर अयोग्य ठहराया गया। पांच निर्दलीय विधायकों को एक राजनैतिक दल में शामिल होने के कारण अयोग्य ठहराया गया। हाईकोर्ट ने विधायकों की अयोग्यता को सही माना और स्पीकर के विचार से सहमत हुए। माननीय सुप्रीम कोर्ट ने अलग विचार रखते हुए सभी 16 विधायाकें की सदस्यता को बहाल कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि ये ग्यारह विधायक हमेशा भाजपा के सदस्य रहे हैं और वे अब भी जारी है। वे भाजपा के व्हिप से बंधे हैं। इसी प्रकार पांच विधायकों की सदस्यता बहाल की गई। 11 अयोग्य विधायकों को उनकी अयोग्यता के बाद इन विधायकों ने भाजपा के प्रति अपना समर्थन जारी रखने की घोषणा कर दी थी। उन्होंने कर्नाटक के राज्यपाल को लिखा है कि वे 6.10.2010 की अपनी शिकायत को वापिस लेते हैं और श्री बी.एस. येदियुरप्पा की भाजपा सरकार का समर्थन जारी रखते हैं।

राज्यपाल ने कई अनौचित्यताएं और असंवैधानिकताएं की हैं। हालाकि सरकार के पास बहुमत का समर्थन है। फिर भी राज्यपाल ने मंत्रिपरिषद की सलाह पर 16.5.2011 को राज्य विधानसभा का सत्र नहीं बुलाया। राज्यपाल का एक लोकप्रिय बहुमत प्राप्त मंत्रिपरिषद की सलाह को विधानसभा के सत्र को बुलाने के लिए अस्वीकार करने का कोई अधिकार या अथारिटी नहीं है। राज्यपाल ने मीडिया को इंटरव्यू दिया कि कर्नाटक में सदन में 'टेस्ट' देना कोई सर्वश्रेष्ठ टेस्ट नहीं है। समझा जाता है कि अब उन्होंने भारत सरकार ाके संविधान के अनुच्छेद 356 के अंतर्गत सोद्देश्य प्रस्तावित कार्रवाई करने के लिए लिखा है। ऐसा करने का कोई आधार नहीं है।

शेष पृष्ठ 24 पर...

भाजपा मुख्यमंत्रियों ने राज्यपाल भारद्वाज को वापस बुलाने की मांग की

कर्नाटक के राज्यपाल श्री हंसराज भारद्वाज की सेवाएं समाप्त कर उन्हें वापस बुलाने की मांग को लेकर भाजपा के पांच मुख्यमंत्रियों ने 19 मई को प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह को अलग–अलग पत्र लिख कर कहा कि श्री भारद्वाज भारतीय संविधान के संघीय ढ़ांचे को नष्ट और ध्वस्त करने में जुटे हैं। ऐसे में उनकी सेवाएं तुरंत समाप्त कर उन्हें वापस बुला लेना चाहिए। भाजपा मुख्यमंत्रियों ने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर केन्द्र से इस मामले में हस्तक्षेप की मांग की। प्रधानमंत्री को गुजरात के मुख्यमंत्री सर्वश्री नरेन्द्र मोदी, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री प्रेम कुमार धूमल और ने पत्र लिखकर आरोप लगाया कि कर्नाटक के राज्यपाल भारतीय संविधान के संघीय ढ़ांचे को 'नष्ट और ध्वस्त' करने में जुटे हैं। ■

'अंत्योदय' को साकार करतीं भाजपा राज्य सरकारें

भारतीय जनता पार्टी के मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन का आयोजन 9–10 मई 2011 को नई दिल्ली में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में विचार–विमर्श के बाद 10 मई को एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसके मूल पाठ का भावानुवाद प्रस्तुत है।

हम भारतीय जनता पार्टी के मुख्य मंत्रीगण, उप–मुख्यमंत्रीगण एवं अन्य पदाधिकारीगण सुशासन के माध्यम से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए अपनी पूरी प्रतिबद्धता के प्रति वचनबद्ध है। हमें पूर्ण विश्वास है कि राष्ट्रवाद की प्रेरणा लेकर और विकास को अपना साध्य बना कर हम निरंतर ही अंत्योदय के मार्ग पर सफलतापूर्वक अग्रसर होंगे।

सुशासन ही राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था का प्रमुख अंग है, परन्तु यूपीए शासन में यही दुर्गति का शिकार हो गई है, हमारा यह निश्चित विश्वास है कि सुशासन में कानून का राज, पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ–साथ वास्तविक लोकतंत्र तथा भागीदारी निहित रहती है। भाजपा ने सदैव माना है कि भ्रष्टाचार किसी व्यक्ति की गरिमा पर भारी प्रहार है और इससे एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की जिम्मेदारी के साथ गहरी दगाबाजी का सूचक है। हम मानते हैं कि सभी नागरिकों का कर्त्तव्य है कि वे किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार को रोकने में सहायक बने और हमारा यह सम्मेलन ऐसे किसी भी प्रयास के लिए सबसे अधिक सहायक और समर्थन करेगा।

यूपीए शासन में भ्रष्टाचार कई गुणा बढ़ा है और अनेक प्रकार से यूपीए सरकार ने हमारे देशवासियों को दगा दिया है। यूपीए की भ्रष्ट व्यवस्था ने हमारे राष्ट्रीय गौरव को नीचा किया है, निर्धन वर्ग के लोग कल्याणकारी योजनाओं के लाभ से वंचित रह गए हैं तथा परिणामतः हमारे राष्ट्रीय विकास की गति बुरी तरह से धीमी पड़ गई है। भ्रष्टाचार का कैंसर हमारी राजनीतिक व्यवस्था और सार्वजनिक जीवन के प्रमुख अंगों को खाए चला जा रहा है।

इससे पूर्व कभी भी किसी केन्द्र सरकार ने विश्वसनीयता के इतने भारी संकट का सामना नहीं किया है। जितना इस सरकार में असंख्य घपले घोटाले एवं सत्ताधारी लोग शामिल होना रहा है, उतना कभी देखने में नहीं आया। इस पृष्ठभूमि को देखते हुए, बड़े सुनियोजित ढंग से सभी राजनैतिक दलों को एक ही ब्रुश से रंगने की कोशिश की जा रही है।

हम ऐसे किन्हीं भी प्रयासों का जोरदार विरोध करते हैं। साथ ही, हम अपने अंतःकरण में भी झांकना चाहेंगे। हम भ्रष्टाचार मुक्त भारत बनाने के लिए स्वयं भी व्यवस्था में सुधार लाने के लिए समर्पित रहेंगे। यह बड़े संतोष का विषय है कि अनेकों भाजपा राज्य सरकारों ने अपनी शानदार उपलब्धियों से लोगों की प्रशंसा प्राप्त की है। हम इससे भी आगे बढ़ने के लिए संकल्पशील है।

यूपीए सरकार अनेकों संवेदनशील मुद्दों पर दलगत राजनीतिक दृष्टिकोण अपनाए हुए हैं, जिनमें न केवल राष्ट्रीय विकास बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे भी जुड़े हैं। भाजपा सरकारों द्वारा पारित

अनेकों प्रमुख विधेयक लम्बे समय से राजनैतिक कारणों से राज्यपालों की स्वीकृति के बिना लम्बित पड़े हैं। यह सम्मेलन ऐसे दलगत दृष्टिकोण की घोर निंदा करती है और हर संभव ढंग से इसके खिलाफ संघर्ष जारी रखने का संकल्प लेती है।

हमारा संकल्प है कि हम अत्यधिक कारगर ढंग से लोगों के पास पहुंचे और उन्हें सुशासन, पारदर्शिता और जवाबदेही के प्रति अपनी वचनबद्धता से आश्वस्त करेंगे। इस प्रयोजन के लिए यह सम्मेलन निम्नलिखित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए हर सुनिश्चित प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध है:

(क) समय–समय पर हमारी सरकारें अपनी परफॉर्मेंस की समीक्षा के लिए आंतरिक तंत्र स्थापित करेगी और निम्न के लिए उपाए करने की संभावनाएं तलाशेंगी–
- विभिन्न स्तरों पर 'डिलीवरी मैकेनिज्म' में सुधार लाना।
- शासन पद्धति में सुधार करना, विशेष रूप से निर्णय लेने के विषय में अधिक खुलापन और समावेशी बनाना।

(ख) बजट तैयारी, कार्यान्वयन और व्यय अधीक्षण में और अधिक पारदर्शिता तथा जवाबदेही बनाना और साथ ही प्रतिस्पर्धात्मक लोक–क्रय प्रक्रियाएं स्थापित करते हुए 'ओपन गवर्नमेंट' का ढांचा तैयार करना।

(ग) समय–समय पर राज्य जीडीपी के आंकड़े घोषित करने का प्रचलन स्थापित करना और सामाजिक संकेतकों में सुधार लाना।

(घ) न केवल कल्याण योजनाओं के कारगर कार्यान्वयन में समाज के विभिन्न वर्गों के साथ प्रभावशाली सहभागिता करना बल्कि भ्रष्टाचार का भी उन्मूलन करना।

(ङ) भ्रष्ट कर्मचारियों और निर्वाचित लोक–प्रतिनिधियों को प्रशासनिक तथा कानूनी रूप से दण्डित करने की व्यवस्था स्थापित करना तथा विभिन्न स्तरों पर रोकथाम तत्त्वों को पुनः स्थापित करना।

(च) सूचना संचार प्रौद्योगिकी (जेसीटी) के उपयोग स्तर को बढ़ाना जिससे सार्वजनिक दायरे में सभी सूचनाएं बेहतर ढंग से शुरू की जा सकें और ई–टेण्डरिंग तथा ई–प्रोक्योर्मेंट जैसे साधन इस्तेमाल कर बेहतर पारदर्शिता और जवाबदेही लाना।

सुशासन ही राष्ट्रीय राजनीतिक व्यवस्था का प्रमुख अंग है, परन्तु यूपीए शासन में यही दुर्गति का शिकार हो गई है, हमारा यह निश्चित विश्वास है कि सुशासन में कानून का राज, पारदर्शिता और जवाबदेही के साथ–साथ वास्तविक लोकतंत्र तथा भागीदारी निहित रहती है।

(छ) लाभ–वितरण में विवेक तत्त्वों को कम करने की संभावनाएं तलाशना।

(झ) धन–बल की भूमिका रोकने के उद्देश्य से कुछेक महत्वपूर्ण चुनावी सुधारों पर आम सहमति तैयार करना। साथ ही, स्थानीय चुनावों में विभिन्न चुनावी प्रक्रियाओं के प्रयोगों की संभावनाएं तलाश करना जिससे पता चल सके कि कैसी प्रक्रिया साफ–सुथरे लोकतंत्र के लिए अधिक बेहतर है।

(ञ) दो मंत्री अध्ययन समूहों की स्थापना करना जो नगरीय शासन और ग्रामीण शासन की बेहतर उत्कृष्टता में सुधार लाने के लिए समान उपाए सुझा सकें जिससे विशेष रूप से निर्विघ्न प्रशासन चलाने पर विशेष ध्यान दिया जाएगा और साथ ही अधिक विकेन्द्रीयकरण, धनराशियों, कार्यों तथा अधिकारियों के अंतःरण जैसे मामलों में स्थानीय स्वायत्त शासन को मजबूत किया जा सके।

(ट)यूपीए सरकार द्वारा हमारे संविधान के मूल परिसंघीय ढांचे को कमजोर करने के सभी प्रयासों के बावजूद इसके मजबूत करने की दिशा में प्रयास करना।

(ठ)यूपीए सरकार अनेकों विपक्ष–शासित राज्यों को तंग और डराने धमकाने के लिए केन्द्रीय एजेंसियों का दुरूपयोग करती है और भाजपा शासित राज्यों के साथ भेदभावपूर्ण नीति के खिलाफ जोरदार संघर्ष करना।

(ड) सरकारिया आयोग की सिफारिशों पर बहस को आगे बढ़ाना जिसमें राज्यपाल की भूमिका भी शामिल है और इसकी सिफारिशों को कार्यान्वयन के लिए कदम उठाना।

(ढ) आतंकवाद के विरूद्ध युद्ध जारी रखना और वोट बैंक राजनीति से प्रभावित हुए बिना राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के प्रयास करना। इस मुद्दे पर केन्द्र सरकार के साथ हर प्रकार का सहयोग करने के लिए हम तैयार हैं।

(ण) लोक–शिकायतों के समाधान के लिए एक पुल का काम करते हुए पार्टी संगठन का सुविधा तंत्र तैयार करना।

(10 मई को मुख्यमंत्री सम्मेलन में सर्वसम्मति से पारित)

■

संप्रग अब चुनौतियों के घेरे में

✍ v#.k tVyh

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव नतीजों के विश्लेषण से एक रोचक तस्वीर उभरती है। कांग्रेस के पास यह संतोष करने का कारण है कि उसने असम और केरल में जीत हासिल की और पश्चिम बंगाल में उसकी सहयोगी तृणमूल कांग्रेस को भारी सफलता हासिल हुई, लेकिन नतीजों के गहन विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि कांग्रेस के पास चिंतित होने के लिए भी बहुत कुछ है। केरल में कांग्रेस की बड़ी जीत की संभावना जताई जा रही थी, लेकिन मुख्यमंत्री वीएस अच्युतानंदन की साफ–सुथरी छवि और संप्रग के इर्द–गिर्द फैले घोटालों ने भ्रष्टाचार को मुख्य भूमिका में ला दिया। परिणाम यह हुआ कि वामदलों के गठबंधन के सफाए का सपना देख रहा कांग्रेस के नेतृत्व वाला गठबंधन यूडीएफ बस किसी तरह जीत हासिल कर सका। अगर वाम दलों के पास दो सीटें और आ जातीं तो चुनावों का समग्र परिणाम एकदम अलग होता और उसे संप्रग के लिए बहुत बड़ा धक्का माना जाता।

संप्रग केरल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में अपने मजबूत प्रदर्शन के दम पर केंद्र की सत्ता में आया था, लेकिन आंध्र प्रदेश के उपचुनावों ने यह दिखा दिया है कि जगनमोहन रेड्डी की बगावत के बाद कांग्रेस कमजोर हुई है। तमिलनाडु में भी हनीमून समाप्त हो गया है। केरल में कांग्रेस के पास बेहद मामूली बढ़त है। छत्तीसगढ़ और कर्नाटक के उपचुनावों से यह संकेत मिलता है कि भाजपा इन राज्यों में अपनी मजबूत पकड़ बनाए हुए है। कुल मिलाकर संप्रग की राष्ट्रीय स्थिति लचर नजर आ रही है। अगर चार दक्षिणी राज्यों के चुनावों से मिले संकेतों को लोकसभा चुनावों के दृष्टिकोण से देखा जाए तो संप्रग को अकेले दक्षिण में 45 संसदीय सीटों का नुकसान होने जा रहा है।

पश्चिम बंगाल के चुनाव परिणाम वामदलों के खिलाफ निर्णायक जनादेश है। वामदलों ने इस राज्य पर 34 वर्षो तक शासन किया। उसने अनेक चुनाव जीते। यह जीत उसे इसलिए हासिल नहीं हुई कि वामदलों ने सुशासन की कोई मिसाल पेश की, बल्कि एक प्रकार से उन्हें गलती से जीत हासिल होती रही। वामदलों का कोई विकल्प नहीं था। लोगों के मत तृणमूल कांग्रेस, कांग्रेस और भाजपा के बीच बंटते रहे। कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस के गठबंधन ने गैर वामपंथी ताकत का एक चित्र लोगों के सामने प्रस्तुत किया। सिंगुर और नंदीग्राम के घटनाक्रम से पश्चिम बंगाल में वामपंथी विचारधारा का विरोध एक नए स्तर पर पहुंच गया।

पिछले लोकसभा चुनाव से यह स्पष्ट हुआ कि वामदलों को उनके गढ़ में पराजित किया जा सकता है। इन सभी कारकों का समग्र असर वामदल विरोधी भावना के मजबूत होने के रूप में सामने आया। ममता बनर्जी के नेतृत्व में तृणमूल कांग्रेस ने निर्णायक जीत हासिल की। ममता बनर्जी के पक्ष में चल रही लहर से कांग्रेस भी लाभान्वित हुई। वामपंथी विचारधारा का वैश्विक स्तर पर पराभव हो चुका है। मार्क्सवाद का राजनीतिक और आर्थिक मॉडल पूरे विश्व ने खारिज कर दिया है। बंगाल के हालिया चुनाव से यह उजागर हो गया कि इस मामले में भारत भी अब शेष दुनिया की राह पकड़ चुका है। पश्चिम बंगाल के लिए यह महत्वपूर्ण है कि ममता बनर्जी सफल हों। इस मामले में लोगों के तर्क–वितर्क आरंभ हो चुके हैं। क्या पश्चिम बंगाल का नतीजा कांग्रेस को राहत देने वाला है? कांग्रेस ममता बनर्जी की राजनीतिक शैली से भली–भांति वाकिफ है। कांग्रेस को वह स्थिति पसंद आती जब ममता बनर्जी पश्चिम बंगाल में अपने भविष्य के लिए कांग्रेस पर निर्भर होती। एक स्वतंत्र ममता बनर्जी को बंगाल में कांग्रेस की जरूरत नहीं है। केंद्र सरकार में उनके हित अलग तरह के हैं। कांग्रेस के लिए यह स्थिति चिंता का

केरल में नजदीकी और असम में प्रभावशाली जीत के बावजूद संप्रग के लिए असली चुनौती अब शुरू हुई है। शक्तिशाली ममता बनर्जी कांग्रेस के साथ किस तरह निपटेगी? डीएमके घायल है। करुणानिधि परिवार के सदस्य कानून के शिकंजे में आ रहे हैं। क्या डीएमके इस घटनाक्रम से नाखुश होगी या बेचैन होगी? कोई भी स्थिति हो, कांग्रेसनीत संप्रग के लिए शुभ संकेत नहीं है।

विषय है।

तमिलनाडु का जनादेश भ्रष्टाचार और परिवारवाद के खिलाफ लोगों की प्रतिक्रिया का नतीजा है। भ्रष्टाचार केवल 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले तक ही सीमित नहीं था। करुणानिधि सरकार अनेक लोकलुभावन योजनाओं के बावजूद भ्रष्टाचार के अनेक गंभीर आरोपों में घिरी थी। यह राज्य करुणानिधि परिवार के सदस्यों के बीज कामकाजी और भौगोलिक रूप से बंट गया था। क्या कोई राज्य इतना कमजोर हो सकता है कि उस पर एक परिवार विशेष अपना नियंत्रण कायम कर ले? मतदाताओं ने यह सिद्ध किया कि उन्हें यह स्थिति स्वीकार नहीं। जयललिता खुद एक समय भ्रष्टाचार के आरोपों से घिर चुकी हैं, लेकिन आज वह भ्रष्टाचार के खिलाफ आंदोलन का चेहरा बन गई हैं। एआइएडीएमके ने तमिलनाडु में वैसी ही विशाल जीत हासिल की जैसी बिहार में नीतीश कुमार गठबंधन को मिली थी। तमिलनाडु का संदेश स्पष्ट है। आप को चुनाव में जीत हासिल करने के लिए ईमानदार छवि और टिकाऊ विकास की जरूरत होती है।

असम का परिणाम निःसंदेह असम गण परिषद और भाजपा के लिए एक झटका है। यह तथ्य विशेष रूप से निराशाजनक है कि एयूडीएफ और बोडो पिपुल्स फ्रंट को इन दोनों दलों से अधिक सीटें हासिल हुई। भाजपा असम गण परिषद के साथ खुला गठबंधन चाहती थी, लेकिन अगप भाजपा के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों के बावजूद गठबंधन के लिए तैयार नहीं हुई। विरोधी दलों के मतों के इस विभाजन के कारण ही कांग्रेस की राह आसान हो गई। अगर अगप और भाजपा ने मिलकर चुनाव लड़ा होता तो कांग्रेस की सीटों में काफी कमी आ सकती थी। कांग्रेस असम में सरकार बनाएगी और एयूडीएफ को नेता विपक्ष चुनने का मौका मिलेगा। असम की राजनीति के लिए यह शुभ संकेत नहीं। इसलिए नहीं, क्योंकि एडीयूएफ ने बांग्लादेशी घुसपैठियों के मतों के आधार पर चुनावी सफलता हासिल की।

केरल में नजदीकी और असम में प्रभावशाली जीत के बावजूद संप्रग के लिए असली चुनौती अब शुरू हुई है। शक्तिशाली ममता बनर्जी कांग्रेस के साथ किस तरह निपटेगी? डीएमके घायल है। करुणानिधि परिवार के सदस्य कानून के शिकंजे में आ रहे हैं। क्या डीएमके इस घटनाक्रम से नाखुश होगी या बेचैन होगी? कोई भी स्थिति हो, कांग्रेसनीत संप्रग के लिए शुभ संकेत नहीं है। संप्रग को सर्वाधिक सफलता राजस्थान, आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु और उत्तर प्रदेश में मिली थी। इन राज्यों में उसकी ताकत घटने के स्पष्ट संकेत नजर आ रहे हैं। कहने की जरूरत नहीं कि चुनाव नतीजों का जो असर दिखाई दे रहा है और उनके वास्तविक परिणामों में बहुत अंतर है।

(लेखक वरिष्ठ भाजपा नेता व राज्यसभा में विपक्ष के नेता हैं)
दैनिक जागरण से साभार ■

~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

संसद में युवा

अनुराग का ''अच्छा प्रदर्शन'': द वीक

राहुल का होलो-लो-लो

साप्ताहिक द वीक ने अपने 15 मई 2011 के अंक में संसद में युवा सांसदों की पिछले दो वर्ष के प्रदर्शन पर एक विशेष समीक्षा प्रकाशित की है जिस में भाजयुमा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर संसदीय चुनाव क्षेत्र के सांसद श्री अनुराग ठाकुर के संसद में प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुये उन्हें ''अच्छे प्रदर्शन'' के लिये सराहा है। द वीक ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि युवा सांसद तो बड़े धूमधमाके से संसद में आये थे और जनता को उनसे आशाएं भी बहुत थीं पर बाद में चुप बैठ गये। ''इन युवा सांसदों से आशा बंधी थी कि वह बदलाव लायेंगे, पर कुछ नहीं बदला''।

अपनी समीक्षा में साप्ताहिक ने पांच सांसदों को ''अच्छे प्रदर्शन'' की श्रेणी में रखा और पांच ही को ''बुरे प्रदर्शन'' की श्रेणी में। द वीक ने श्री अनुराग ठाकुर की चर्चा सर्वप्रथम की जो सब से कम उम्र के सांसद है जो दूसरी बार चुने गये है। संसद में उनकी उपस्थिति 86 प्रतिशत थी। उन्होंने 39 चर्चाओं में भाग लिया और 284 प्रश्न पूछे।

द वीक ने कांग्रेस महासचिव एवं सांसद श्री राहुल गांधी को ''खराब प्रदर्शन'' की श्रेणी में डाला है जिन्होंने संसद में उपस्थिति तो 47 प्रतिशत दर्ज की पर न किसी चर्चा में भाग लिया और न ही कोई प्रश्न ही पूछा।■
~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~~

सरकार की अक्षमता चरम शिखर पर

Hkkजपा की राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीमती निर्मला सीतारमन ने 19 मई को प्रेस वक्तव्य जारी कर कहा कि यूपीए– II सरकार ''कुशासन'' रोग से बुरी तरह ग्रस्त है। इस सरकार के अनेकों मंत्रालयों के प्रदर्शन को देख कर उसकी दिशाहीनता सामने आ जाती है। कांग्रेस पार्टी उसकी बदहाली को बढ़ाने में पूरी उदारता बरत रही है।

श्रीमती सीतारमन ने कहा कि हाल के कुछ निर्णयों से पता चलता है कि यूपीए–II के पहले दो वर्षों में वह अपना काम दिन–प्रतिदिन आधार पर करती आगे बढ़ने का प्रयास कर रही है। गृह मंत्री ने यह दिखाने का बड़ा प्रयास किया है कि 26/11 हमले के बाद सरकार के अन्वेषणकारी और खुफिया संगठनों में भारी तालमेल बनाया है, आज उसकी असफलता सामने आ जाती है कि सीबीआई मुख्य आरोपी किम डेविड के प्रत्यर्पण के लिए कोपेनहेगन में मियाद खत्म हुआ वारण्ट लेकर वहां पहुंच जाते हैं।

उन्होंने कहा कि पुरूलिया में हथियारों का गिराने वाली घटना अत्यंत सनसनीखेज और संवेदनशील मामला था, जो आंतरिक सुरक्षा तथा खुफिया एजेंसियों की भूमिका पर गहरा प्रभाव डालता था। कांग्रेस पार्टी और यूपीए को इस मामले पर बहुत कुछ स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता है। क्या किम डेविड भी क्वात्रोच्ची की तरह छूट जाएंगे? क्या सीबीआई इस मामले को गड्डमड्ड करने की कोशिश में है? निश्चित ही सीबीआई इतनी अक्षम नहीं हो सकती। सीबीआई का दावा है कि ''यह गलती से हो गया'' केन्द्रीय गृहमंत्री ने भी ''अत्यधिक वांछित 50 भगौड़ों'' की सूची के मुद्दे पर भी यह

बात कही। 26/11 की घटना के बाद किए गए लम्बे–चौड़े दावों के बावजूद उनका मंत्रालय एक के बाद एक ''मानवीय गलतियां'' करता जा रहा है। देश को मंत्री महोदय के इतने भारी अक्खड़पन पर हैरानी होती है। जबकि वह साथ ही साथ गम्भीर भूल की जिम्मेदारी भी लेते हैं। भाजपा का मानना है कि यूपीए सरकार की अपार अक्षमता पर राजनैतिक विवाद में पड़ने की बजाए मंत्री महोदय को अपने काम पर ध्यान देना चाहिए और देश को आगे किसी प्रकार की शर्मिंदगी से बचाना चाहिए। कर्नाटक के राज्यपाल तो अब संवैधानिक अनौचित्यतता के 'हिस्ट्रीशीटर' बन गए हैं। उनका आचरण तो अब डांट फटकार लायक भी नहीं रहा। अब तो यह मानने के बहुत से कारण हैं कि वे राज्य के संवैधानिक प्रमुख होने के बजाए कांग्रेस पार्टी के एजेंट के रूप में काम कर रहे हैं। उनकी यह स्थिति बर्दाश्त से बाहर है और उनके पद से हटाया ही जाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि खाद्यान्न और दालों का नया भण्डार बाजार में पहुंचने से कृषि संकट गहराता चला जा रहा है। एफसीआई के गोदाम पुराने और सड़े अनाज से भरे पड़े हैं और नतीजा यह है कि नए भण्डार को रखने का स्थान ही नहीं है। आंध्र प्रदेश धान के किसानों के लिए मदद मांग रहा है। मिल–मालिक और बिचौलिए सरकार की दिशाहीन बने रहने के कारण अपना मुनाफा जम कर बटोर रहे हैं। सत्ताधारी कांग्रेस हाल के चुनावों में अपनी जमा–राशि गवांने पर अपनी ही पार्टी के झगड़ों में लगी हुई है। कृषि सम्बन्धी केन्द्रीय सरकार के दो मंत्री एक–दूसरे से इस बात पर ही सहमत नकि धान का निर्यात किया जाए या इसे सड़ने दिया जाए। किसानों ने तो अपना काम पूरा कर दिया, परन्तु वे बदहाल हैं क्योंकि सरकार को खुद ही यह पता नहीं है कि वह क्या करे? कितनी अपार अदूरदर्शिता और गैर–तैयारी का नमूना है यह। और यह तो उस सरकार की हालात है जो खाद्य–सुरक्षा की डींगे मारती है। अक्षमता और राजनैतिक इच्छा की कमी के निर्णयों से खाद्यान्न सुरक्षा गड्ढे में जा रही है। किसानों से बात करते हुए भी उनकी चिंताएं बहुत अधिक नहीं होती है। कांग्रेस महासचिव अधिग्रहण सम्बन्धी मामलों पर कभी–कभी बात करने की कोशिश करते हैं तो उसमें भी उनकी चिंताओं की बजाए हड़बड़ी ज्यादा रहती है। इस सम्बन्ध में मूल गणित भी उनकी अतिश्योक्ति के कारण जरूरत से ज्यादा जोश में भुला दिया जाता है। महिलाओं की सच्चाई और आदर का भाव भी सुशासन मूल्यों के सम्मान की कमी की भेंट चढ़ जाता है। यदि भट्टा–पारसौल के किसानों की हालत ने महासचिव का दिल दहला दिया था तो उस समय ये कहां थे जब उनकी अपनी ही सरकार में आंध्रप्रदेश श्रीकाकुलाम जिले के ककरापिल्ली की घटना घटी थी? वहां भी किसान ही थे जहां सीधे कांग्रेस का ही शासन था। अब यूपीए–II की अक्षमता चरम पराकाष्ठा पर है और यह पूरी तरह व्यापक है। क्या सरकार जरा भी इसे सुधारने पर ध्यान देती है? ■

किसान नेता महेंद्र सिंह टिकैत नहीं रहे

fdसानों की मांग के समर्थन में दिल्ली स्थित वोट क्लब पर जबर्दस्त धरना प्रदर्शन का आयोजन कर सरकार को घुटने टेकने पर मजबूर कर देने वाले किसान नेता महेंन्द्र सिंह टिकैत का 15 मई 2011 को निधन हो गया। किसानों के हक में सतत संघर्षरत रहे टिकैत कई बार गिरतार किये गए।

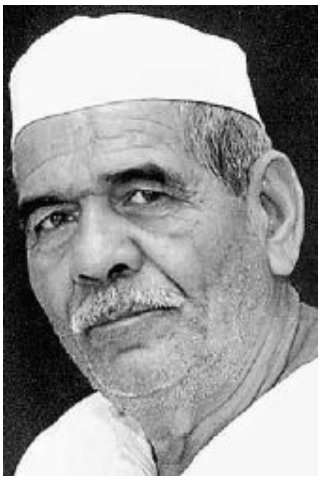

टिकैत का जन्म 1935 में मुजफरनगर के सिसौली गांव में एक जाट परिवार में हुआ था। किसानों की गरीबी और राजनीतिक सत्ता तक अपनी आवाज पहुंचाने में उनकी असफलता को टिकैत ने अपना मुख्य हथियार बनाया। पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के निधन के बाद उन्होंने सफलतापूर्वक किसान आंदोलन की बागडोर अपने हाथों में ले ली और 17 अक्तूबर 1986 को गैर राजनीतिक संगठन 'भारतीय किसान यूनियन' की स्थापना की। ■

'kksd lUns'k

भारतीय किसान संघ के 76 वर्षीय अध्यक्ष का निधन 15 मई 2011 को मुजफरनगर, उत्तर प्रदेश में प्रातःकाल हो गया। वे कैंसर की बीमारी से लम्बे समय से पीड़ित थे। उन्होंने केन्द्रीय सरकार की किसान विरोधी नीतियों के खिलाफ अनेक लोकप्रिय किसान आंदोलन शुरू किए तथा विभिन्न राज्यों में भी किसानों की न्यायोचित मांगों का समर्थन किया। उन्होंने ला वाया केम्पेसीनिया, भारत में फार्मर्स कोआर्डिनेशन कमेटी आदि जैसी अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ निकट सम्पर्क बना कर काम किया तथा डब्ल्यूटीओ में किसान–विरोधी लाबीज के खिलाफ संघर्ष करते रहे। भारत में उनके असामयिक निधन किसान आंदोलन का एक कुशल नेता और उनकी न्यायसंगत मांगों के लिए जमीन से जुडा एक यथार्थवादी और ईमानदार चैम्पियन खो दिया है।

&fufru xMdjh] jk"Vªh; v/;{k] Hkktik

भारतीय किसान यूनियन के अध्यक्ष तथा वरिष्ठ किसान नेता श्री महेन्द्र सिंह टिकैत के निधन के समाचार से मुझे गहरा दुःख पहुंचा है। किसानों की समस्याओं को लेकर श्री टिकैत ने आजीवन संवेदनशीलता और सक्रियता दिखाई। किसानों के हित के लिए उन्होंने अनेक बार कड़ा संघर्ष किया। श्री टिकैत किसान आन्दोलन के प्रमुख स्तम्भ थे। एक जुझारू एवं संघर्षशील किसान नेता के रूप में उनकी छवि आम जनता के स्मृति पटल पर सदैव अंकित रहेगी। उनके निधन से किसानों के हित के लिए उठने वाले स्वरों में से एक महत्वपूर्ण स्वर सदा के लिए शांत हो गया। उसकी भरपाई मुश्किल है। मैं श्री टिकैत के प्रति भावभीनी श्रद्धाजंलि अर्पित करता हूं तथा शोक–संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता हूं।

&jktukFk flag] iwoZ jk"Vªh; v/;{k] Hkktik ■

पृष्ठ 19 का शेष...

कर्नाटक के राज्यपाल की एच.आर. भारद्वाज का इस प्रकार का राजनैतिक विवाद पैदा करने की कोशिश, जबकि ऐसा विवाद है ही नहीं, कोई पहली बार नहीं की जा रही है। हम, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की ओर से आपसे आग्रह करने के लिए विवश हुए हैं कि केन्द्र सरकार राज्यपाल की सिफारिशों को सीधे खारिज कर दे। हम आपसे यह भी अपील करते हैं कि श्री एच.आर. भारद्वाज को राज्यपाल के रूप में उनकी नियुक्ति जारी न रखी जाए और उन्हें वापस बुलाने की प्रक्रिया शुरू की जाए। उनके कार्य, रवैया और स्वभाव राज्यपाल के पद पर निष्पक्ष रूप से काम करने के अनुसार नहीं है।

भवदीय

¼ykyÑ".k vkMok.kh½ कार्यकारी अध्यक्ष, राजग	¼fufru xMdjh½ अध्यक्ष, भाजपा	¼'kjn ;kno½ संयोजक, राजग	¼lq"kek Lojkt½ विपक्ष की नेता– लोकसभा
¼v#.k tsVyh½ विपक्ष के नेता– राज्यसभा	¼,l-,l- vgyqokfy;k½ उप–नेता (राज्यसभा)	¼vuar dqekj½ सांसद, लोकसभा	

■

साईकिल चलाकर किया पेट्रोल मूल्यवृद्धि का विरोध

कांग्रेसनीत यूपीए सरकार द्वारा गत एक वर्ष में पेट्रोल की कीमतों में आठवीं बार की गई वृद्धि के खिलाफ भारतीय जनता पार्टी ने देश भर में अनूठे तरह से विरोध प्रदर्शन आयोजित किया, कहीं रैलियां निकाली, जुलूस निकाले, पैदल मार्च किया, बैलगाड़ी और साईकिल यात्रा निकाली, तो कहीं जनसभा और नुक्कड़ सभाओं का आयोजन कर केन्द्र सरकार की जनविरोधी नीतियों के खिलाफ आमजन के आक्रोश को मुखर किया। भाजपा नेताओं ने चेतावनी दी कि यदि केन्द्र सरकार पेट्रोल मूल्य वृद्धि वापस नहीं लेती है तो सरकार के खिलाफ संघर्ष तेज किया जाएगा। हम यहां देश भर में हुए विरोध प्रदर्शनों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्रकाशित कर रहे हैं:

दिल्ली

पेट्रोल के दामों में की गई भारी वृद्धि के खिलाफ 16 मई को भाजपा ने पूरी दिल्ली में चक्काजाम कर दिया।

अनेक स्थानों पर कार्यकर्ताओं की पुलिस से भिडंत हुई। प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता समेत 10,000 कार्यकर्ता गिरफ्तार किये गये। गिरफ्तार होने वाले अन्य प्रमुख नेता हैं सर्वश्री प्रो. विजय कुमार मल्होत्रा, विजय गोयल, प्रो. ओमप्रकाश कोहली, वाणी त्रिपाठी, प्रो. जगदीश मुखी, रमेश बिधूड़ी, डॉ. हर्षवर्धन, चेतन चौहान, साहब सिंह चौहान, पवन शर्मा, सुभाष आर्य आदि।

दिल्ली के हर प्रमुख चौराहे पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने सरकार विरोधी नारे लगाते हुये जबरदस्त धरना–प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व भाजपा दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता ने किया। 14 भाजपा जिलों के 14 महत्वपूर्ण चौराहों– लालकिला चौक, अम्बेडकर नगर, सुभाष नगर मोड, उत्तम नगर, मोती नगर चौक, खजूरी चौक, रिची–रिच (रिंग रोड़), वेल्कम मेट्रो स्टेशन, विकास मार्ग, जहांगीरपुरी, हमदर्द चौक, पटपड़गंज, मोती बाग, मंगोलपुरी पत्थर मार्केट पर अलग–अलग नेताओं ने प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व किया। आक्रोशित कार्यकर्ता बैलगाड़ियों, ठेलों आदि पर मोटरसाइकिलें, स्कूटर आदि लादकर लाये थे। बड़ी संख्या में महिलाओं, युवकों, बुजुर्गों तथा स्थानीय नागरिकों ने चक्काजाम में भाग लिया। प्रदर्शनकारी यूपीए और शीला सरकार की बर्खास्तगी की मांग कर रहे थे। भाजपा के प्रदर्शन को देखते हुये प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में कल होने वाले मंत्रिसमूह की बैठक स्थगित कर दी गई है।

प्रदेश अध्यक्ष श्री विजेन्द्र गुप्ता सरकार को खुली चेतावनी दी है कि यदि महंगाई पर रोक न लगी तो भाजपा दिल्लीव्यापी उग्र आंदोलन छेड़ेगी। उन्होंने कहा कि जब तक यूपीए सरकार अपनी जनविरोधी नीतियां जारी रखेगी, भाजपा का आंदोलन जारी रहेगा। पार्टी आंदोलन को तेज करेगी। सरकार ने एक नियोजित षड्यंत्र के तहत तेल की कीमतों को तय करने का अधिकार तेल कंपनियों को दिया था ताकि कंपनियां मनमाने ढंग से तेल के दाम बढ़ाकर आम जनता को लूट सकें और सरकार को कहने को रहे की तेल के दाम बढ़ाना या घटाना उसके हाथ में नहीं है। विनियमितीकरण के बाद तेल के दामों में 15.74 रूपये की भारी वृद्धि हुई है। निकट भविष्य में डीजल, मिट्टी का तेल, रसोई गैस आदि के दामों में भी भारी वृद्धि यूपीए सरकार करने जा रही है। आम आदमी की विरोधी इस सरकार का सारा ध्यान भ्रष्टाचार और महंगाई बढ़ाने पर है ताकि बहुराष्ट्रीय कंपनियों और अन्य बड़ी कंपनियों के लाभ में भारी वृद्धि हो तथा आम जनता महंगाई की मार तले इस कदर दब जाये की आंदोलन करने की उसकी क्षमता ही समाप्त हो जाये।

सुबह से ही हजारों की संख्या में भाजपा कार्यकर्ता नारे

लगाते हुये लालकिला चौक, अम्बेडकर नगर, सुभाष नगर मोड़, उत्तम नगर, मोती नगर चौक, खजूरी चौक, रिंग रोड (रिची–रिच के सामने), वेल्कम मैटो स्टेशन के सामने, विकास मार्ग, जहांगीरपुरी, हमदर्द चौक, मदर डेयरी पटपड़गंज, नानकपुरा गुरूद्वारा (धौला कुआं), मंगोलपुरी पत्थर मार्केट, शादीपुर, पटेल नगर, सुभाष मार्ग, खजूरी खास, खानपुर आदि स्थानों पर एकत्र हुये और चक्काजाम किया। अनेक स्थानों पर कार्यकर्ताओं ने यूपीए सरकार के पुतले भी फूंके। कार्यकर्ता इतने रोष में थे कि उन्होंने पुलिस की एक न चलने दी और घंटों प्रदर्शन जारी रखा।

मध्य प्रदेश

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष और सांसद प्रभात झा ने कहा कि कमरतोड़ महंगायी में पेट्रोल मूल्यवृद्धि ने तड़का लगा दिया है। केन्द्र सरकार जनता के साथ छलावा कर रही है। पांच राज्यों के चुनाव नतीजों के बाद पेट्रोल

मूल्यवृद्धि कर जनता को कांग्रेस धोखा दे रही है। इस मूल्यवृद्धि से आम आदमी की जिंदगी दूभर हो गयी है। भोपाल के लिंक रोड नंबर 1 से पेट्रोल मूल्यवृद्धि के विरोध में आयोजित साईकिल रैली का नेतृत्व करते हुए प्रभात झा ने कहा कि पेट्रोल मूल्यवृद्धि से जुड़ी आम आदमी की चिंता की अनदेखी कांग्रेस को महंगी साबित होगी। केन्द्र सरकार ने पेट्रोल मूल्यवृद्धि करके साबित कर दिया है कि कांग्रेस का हाथ आम आदमी के साथ नहीं खास आदमियों के साथ है।

साईकिल रैली में प्रदेश उपाध्यक्ष उषा चतुर्वेदी, जयंत मलैया, रामेश्वर शर्मा, विजेश लुनावत, डॉ. हितेष वाजपेयी आलोक शर्मा, सुरेन्द्रनाथ सिंह, सीमा सिंह, ओम यादव, मदनलाल रांझी, सत्यार्थ अग्रवाल, लिलि अग्रवाल, सुनील पाण्डे, वंदना जाचक सहित भोपाल जिले के पदाधिकारी कार्यकर्ता, पार्षद, मंडल अध्यक्ष ने भाग लिया।

यूपीए सरकार द्वारा पेट्रोल के दामों में बेहताशा मूल्यवृद्धि के विरोध में धार जिला भाजपा कार्यालय से एक साईकिल रैली का आयोजन किया गया। जिसका नेतृत्व प्रदेश संगठन महामंत्री अरविंद मेनन ने किया।

ग्वालियर में साईकिल रैली भाजपा कार्यालय मुखर्जी भवन से प्रारंभ होकर महाराज वाडा पर समाप्त हुई। जबलपुर के मालवीय चौक कमानी गेट से साईकिल रैली प्रारंभ हुई। सतना भाजपा कार्यालय से साईकिल रैली प्रारंभ होकर शहर के विभिन्न मार्गो से होते हुए जय स्तंभ चौक पर समाप्त हुई। रीवा में भाजपा कार्यालय से साईकिल रैली प्रारंभ होकर शहर में भ्रमण करते हुए प्रकाश चौराहा पर समाप्त हुई। सागर के तीन बत्ती चौराहा से साईकिल रैली प्रदेश उपाध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह और जिलाध्यक्ष सुधा जैन के नेतृत्व में शहर के विभिन्न मार्गो से होते हुए अप्सरा टाकिज भगवानगंज चौराहा पर समाप्त हुई।

उज्जैन में पेट्रोल की मूल्यवृद्धि को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने यहां महाकाल मैदान से एक साईकिल रैली निकाली। यहां आयोजित एक सभा को पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यनारायण जटिया ने संबोधित किया।

राजगढ़ में साईकिल रैली अंबेडकर भवन नाका नंबर 3 से प्रारंभ होकर शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए गांधी चौक पर संपन्न हुई।

रायसेन के जिला भाजपा कार्यालय से साईकिल रैली विभिन्न मार्गों से होते हुए तहसील कार्यालय पर समाप्त हुई। बैतूल के भाजपा कार्यालय विजय भवन से साईकिल रैली शहर के विभिन्न मार्गो से होते हुए कलेक्टोरेट परिसर तक पहुंची। सीहोर के कोतवाली चौराहा से साईकिल रैली प्रारंभ होकर सीहोर टाकिज पर समाप्त हुई।

छतरपुर के गल्ला मंडी से छत्रसाल चौराहा तक साईकिल रैली का आयोजन किया गया। पन्ना के कलेक्टोरेट चौराहा से साईकिल रैली प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए गांधी चौक पहुंची। टीकमगढ़ के भाजपा कार्यालय से होते हुए साईकिल रैली शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए गांधी चौराहा पर समाप्त हुई। मुरैना के भाजपा कार्यालय से साईकिल रैली प्रारंभ होकर कलेक्टोरेट चौराहा पर समाप्त हुई। भिण्ड के किला गेट से साईकिल रैली शहर के विभिन्न मार्गों से होते हुए परेड चौराहा पर समाप्त हुई।

श्योपुर के भाजपा कार्यालय से साईकिल रैली प्रारंभ होकर बस स्टेण्ड चौराहा बडौदा रोड पर समाप्त हुई।

गुना के शास्त्री पार्क से साईकिल रैली प्रारंभ होकर हनुमान चौराहा पर समाप्त हुई। अशोकनगर के गांधी पार्क से सुभाष गंज होते हुए साईकिल रैली पुनः गांधी पार्क पहुंचकर समाप्त हुई।

खण्डवा में साईकिल रैली आयोजित की गयी। बडी

शेष पृष्ठ 29 पर...

देश में सकारात्मक राजनीति की पहल शुरू

&laoknnkrk }kjk

भारतीय राजनीति में जहां गलाकाट प्रतिस्पर्धा चल रही हो, आपस में ही जबर्दस्त खींचातानी हो, ऐसे में भाजपा म.प्र. इकाई ने एक सुखद पहल प्रारम्भ करते हुए राजनीति को एक नई दिशा दी है। संगठन द्वारा सत्ता का सम्मान समझ में आता है। पर राज्य में सत्ता के शीर्ष पर बैठे श्री शिवराज सिंह चौहान ने अपने दल भाजपा के अध्यक्ष प्रभात झा का हजारों कार्यकर्ताओं के बीच सम्मान समारोह आयोजित कर उस मूलमंत्र का सम्मान किया जो पं. दीनदयाल उपाध्याय का 'चरैवेति–चरैवेति' का सिद्धांत था। उन्होंने कहा कि श्री झा ने वर्ष के 365 दिनों में संगठन के 284 मण्डलों का दौरा कर एक असाधारण परिश्रम का परिचय दिया है। इस अवसर पर लोकसभा में प्रतिपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि अथक परिश्रम से दुश्मनों की भी मानसिकता बदली जा सकती है। प्रभात जी ने एक वर्ष के कार्यकाल में मध्यप्रदेश भाजपा की राजनीति में जो उदाहरण प्रस्तुत किया, उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता है। यह प्रभात का नहीं, परिश्रम, समन्वय और जीवंतता का सम्मान है, यह भारतीय राजनीति में सकारात्मक राजनीति का सम्मान है।

Hkkरतीय जनता पार्टी, मध्य प्रदेश के अध्यक्ष के रूप में एक वर्ष का कार्यकाल पूरा करने पर श्री प्रभात झा के सम्मान में 8 मई 2011 को भोपाल स्थित मुख्यमंत्री निवास में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश भर से पार्टी कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री निवास पहुंचकर श्री झा का सम्मान किया। 'संगठन गढ़े चलो' के नारे के साथ प्रदेश भाजपा नेताओं ने कार्यकर्ताओं के बूते लगातार तीसरी बार सत्ता में आने का संकल्प दोहराया।

लोकसभा में विपक्ष की नेता श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा कि श्री झा जब अध्यक्ष बने उस समय आशंकाएं व्यक्त की गई थीं, लेकिन उन्होंने अपनी कार्यशैली से आशंकाओं को निर्मूल साबित किया। शिवराज व श्री झा के नेतृत्व में तीसरी बार सरकार बनेगी।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि श्री प्रभात झा ने पार्टी में प्रदेश स्तर पर कई नवाचारों का प्रयोग किया है। यही वजह है जब आज के राजनैतिक दौर में नेता प्रचार का मोह नहीं छोड़ पाता तब प्रभात जी ने बैनर, पोस्टरों और विज्ञापनों में स्वयं

का फोटो न लगाने के निर्देश दिये हैं। उन्होंने कहा कि प्रचार के मोह के चलते विज्ञापनों में राष्ट्रीय नेताओं के चेहरे लगा दिये जाते हैं, जबकि विज्ञापनदाता नेता स्वयं की आदमकद हाथ हिलाते बड़ा फोटो लगवाते हैं। जिसे देखकर लगता है कि जैसे रावण के दस सिर हों। उन्होंने कहा कि नेता इस तरह से अपने राष्ट्रीय नेताओं का सम्मान नहीं अपमान करते हैं। इसे समझने वाले लोगों को समझना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रभात जी पं. दीनदयाल उपाध्याय के मूलमंत्र चरैवेती–चरैवेती का काम कर रहे हैं। सरकार के अच्छे कामों का फायदा मिलने वाले लोगों को जोडने की पहल भी प्रभात झा की देन है। इसके लिए पार्टी स्तर पर हितग्राही सम्मेलन किये जा रहे हैं और लाभान्वित होने वाले लोगों को पार्टी से जोडने की शुरूआत की है। प्रदेश में इस साल 8 लाख कार्यकर्ता नए बने हैं। उन्होंने कहा की आदर्श संगठन के साथ हम सरकार को भी आदर्श बनाने का प्रयास कर रहे हैं। पार्टी के युवा कार्यकर्ता अनुसूचित जनजाति बहुल क्षेत्र में स्वयं के प्रयासों से बडे–बडे आयोजन सादगी के साथ

सफलतापूर्वक कर रहे हैं। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ता दुर्लभ है। पार्टी के लक्ष्यों के प्रति समर्पण का ऐसा भाव है कि अनेक कार्यकर्ता स्वयं के पैसों से पार्टी के कार्यक्रम आयोजित करते हैं।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रभात झा राष्ट्रवादी विचारधारा से ओतप्रोत दृढ़संकल्पी और परिश्रमी व्यक्तित्व के धनी हैं। उन्होंने संगठन का कार्य करते हुए शिक्षा प्राप्त की है उनकी प्रबंध क्षमता के सभी कायल हैं। पार्टी द्वारा समय–समय पर उन्हें अलग अलग करीब 22 राज्यों में मीडिया प्रबंधन का कार्य सौंपा है। ऐसा इसलिए हुआ है क्योंकि श्री झा को जो भी कार्य दिया जाता है वह उसे पूरे परिश्रम से करते हैं। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने आज यहां भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष प्रभात झा की खूब सराहना करते हुए कहा कि आखिर अच्छे काम की प्रशंसा और सम्मान क्यों नहीं किया जाना चाहिए।

श्री चौहान ने उन्हें 'लाडले और यशस्वी' प्रदेश अध्यक्ष के रूप में संबोधित किया। उन्होंने श्री झा के जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वह घनघोर परिश्रम की बदौलत आगे बढे हैं। श्री चौहान ने बीते दो–तीन दशकों के दौरान श्री झा के अलावा मंच पर मौजूद अन्य वरिष्ठ नेताओं से जुडे प्रसंगों का जिक्र करते हुए कहा कि इस राज्य में आदर्श संगठन और आदर्श सरकार है। केंद्रीय संगठन भी यह बात स्वीकार करते हुए अन्य राज्यों के लिए मध्यप्रदेश की मिसाल देता है। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री श्री चौहान को कार्यक्रम आयोजन के लिए सांसद कैलाश जोशी के द्वारा प्रेषित शुभकामना पत्र का वाचन भी किया गया।

श्री प्रभात झा ने 'मिशन 2013' का जिक्र करते हुए कहा कि उनका लक्ष्य तीसरी बार पार्टी को सत्ता में लाकर शिवराज सिंह चौहान को मुख्यमंत्री बनाना है। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं का आह्वान किया कि वे इस मिशन के लिए सक्रिय हो जाएं। श्री झा ने कहा कि उन्होंने ऐसा कोई काम नहीं किया है, जिसके लिए उन्हें सम्मानित किया जाए, वह तो उस जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहे हैं जो पार्टी ने उन्हें सौंपी है।

इस मौके पर उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा कि 'मुझे लगा कि यह मेरा विदाई समारोह तो नहीं है।' फिर उन्होंने कहा कि गांव में जब किसान प्रसन्न होता है तो वह अपने बैल के सींग रंगता है। उसे अच्छा चारा–भूसा देता है। प्रदेश में तीसरी बार सरकार बनानी है तो हमें ऐसे ही बैलों की जरूरत है।

शिवराज जी ने यह भार मेरे कंधों पर डाला है। इस चुनौती को हम सब कार्यकर्ता स्वीकार करते हुए प्रदेश में जीत की हैट्रिक बनाएंगे।

उन्होंने कहा कि जननायक श्री चौहान उनके नेता हैं और वह एक कार्यकर्ता के रूप में उनकी बात मानते हुए संगठन को और मजबूत बनाने के लिए काम करते रहेंगे। श्री झा ने कहा कि उन्होंने हमेशा कठिन परिश्रम को ही प्राथमिकता दी है और यही काम उन्होंने पिछले एक वर्ष के दौरान किया। इस अवधि में उन्होंने राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में सतत प्रवास पर रहते हुए संगठन की असली ताकत कार्यकर्ताओं से जीवंत संपर्क बनाया। यह करके उन्होंने कोई अजूबा नहीं किया। श्री झा ने कहा कि संगठन में कठिन परिश्रम करने वालों की जरूरत है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि कोई व्यक्ति किस क्षेत्र या राज्य का निवासी है। श्री झा ने राजनीति में सादगी, परिश्रम और जनसेवा के भाव को सबसे अधिक महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि अब राजनीति में धन और संपन्नता का भौंडा प्रदर्शन नहीं चलेगा। आने वाले समय में राजनीति में वैसे ही लोगों की पूछ–परख होगी, जो राजनीति को व्यवसाय का साधन नहीं मानते हुए नैतिक बल की बदौलत आम लोगों की सेवा करेंगे। उन्होंने कहा कि इन्हीं विचारों पर आगे बढकर भ्रष्टाचार को कम या समाप्त किया जा सकता है। उन्होंने मुख्यमंत्री के इस सुझाव का समर्थन किया कि भ्रष्टाचार पर अंकुश के लिए चुनाव प्रणाली में सुधार होना चाहिए। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार मिटाने के लिए जनप्रतिनिधियों को वापस बुलाने का अधिकार जनता को दिया जाना चाहिए।

इस अवसर पर प्रभात झा ने पार्टी के वरिष्ठ सदस्यों को पुष्पगुच्छ भेंटकर उनका आशीष प्राप्त किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान के शाल, श्रीफल और स्मृति चिह्न भेंटकर और तिलक लगाकर श्री झा का अभिनंदन किया। कार्यक्रम के उत्तरार्ध में प्रसिद्ध गायिका सुश्री अनुराधा पौडवाल और उनकी पुत्री कविता पौडवाल ने भजनों के द्वारा भक्ति के माधुर्य से संपूर्ण कार्यक्रम को सराबोर कर दिया।

कार्यक्रम में प्रदेश के विभिन्न अचंल से आये बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं के बीच भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री सर्वश्री नरेंद्र सिंह तोमर, प्रदेश महामंत्री (संगठन) अरविंद मेनन, भगवत शरण माथुर, श्रीमती सुमित्रा महाजन, कैलाश सारंग, मेघराज जैन, कप्तान सिंह सोलंकी, सत्यनारायण जटिया, कृष्णमुरारी मोघे, राघवजी, बाबूलाल गौर, रामपाल सिंह, अरविंद मेनन, भगवतशरण माथुर, श्रीमती साधना सिंह, श्रीमती कृष्णा गौर, मध्यप्रदेश प्रतिनिधि सभा के सदस्य सांसद, विधायकगण मौजूद थे। कार्यक्रम का संचालन नंदकुमार सिंह चौहान ने किया। ■

यूपीए ने मनाया विफलताओं और अक्षमताओं का जश्न

fo'k"k lokn nkrk }kjk

सच्चे कांग्रेसी रो रहे हैं। नकली कांग्रेसी मजे मार रहे हैं। और गांधीवादी कांग्रेसी सोनिया गांधी और राहुल गांधी को ढो रहे हैं। आंतरिक लोकतंत्र खो चुकी कांग्रेस में कोई यह कहने को तैयार नहीं है कि कांग्रेसनीत यूपीए सरकार देश को दीमक की तरह नहीं बल्कि भारत के अस्तित्व को नेस्तानाबूद करने में लगी हुई है।

कसाब आज भी मेहमान बना रोटियां तोड़ रहा है। अफजल आज भी बिरयानी खा रहा है। अब तक दोनों आतंकवादियों पर 11 करोड रु. भी खर्च हो चुके हैं! यह कैसी कांग्रेसनीत यूपीए सरकार है जो भारतीयों को मौत के घाट उतारने पर आमादा आतंकवादियों की जर्रानवाजी कर रही है।

अगर यूपीए 2 सफल होता तो बिहार में जो कांग्रेस की दुर्गति हुई है, न होती। सोनिया और राहुल की पोल तो उसी समय खुल गयी जब कांग्रेस को बिहार विधानसभा की 243 सीटों में से मात्र 4 सीटें ही मिलीं। तमिलनाडु में तो कांग्रेस ने अपने घटक डीएमके के साथ ही साथ स्वयं को भी भ्रष्टाचार की बलि की भेंट चढ़ा दिया। वहीं पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी के संघर्ष के बल पर चीटीं की तरह रेंगती कांग्रेस अंतिम सांस ले रही थी। भारत के इतिहास में किसी भी प्रधानमंत्री के काबीना और उसके घटक दल के लोगों को जेलों में नहीं ठूंसा गया। ए. राजा, कनिमोझी, कलमाडी जेल में, अशोक चह्वाण जेल जाने की तैयारी में, 12 काबीना मंत्रियों के जेल जाने की संभावना और खुद चिदम्बरम दागी हैं। प्रधानमंत्री सहित एक नहीं अनेक मंत्री दागी हैं। चीन का दबदबा बढ़ा है, पाक की भी पोल खुली। नक्सलवाद और आतंकवाद महंगाई की तरह बढ़ते जा रहे है। इसके बाद भी कांग्रेसनीत यूपीए सरकार अपने 2 वर्ष पर जश्न बनाये तो यह उसकी स्वयं की मूर्खता होगी और जश्न की जगहंसाई तो हो ही रही है। आइए यूपीए के दो 2 वर्ष पर एक नजर डालें। (सम्पादक)

dkग्रेस–नीत–यूपीए–II सरकार के दो वर्ष पूरे हुए या देश की बदहाली के वर्ष पूरे हुए– यह दोनों ही बातें एक ही पर्याय बनकर सामने आती हैं। फिर भी देश की दुर्गति पर जश्न मनाने का चाव इस कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार में भरा पड़ा है और इसी सिलसिले में प्रधानमंत्री ने कांग्रेस की अध्यक्षा के साथ मिल कर 'डिनर' का आयोजन ही नहीं किया बल्कि यूपीए के रिपोर्ट कार्ड का भी विमोचन किया जिसमें भले ही अपनी उपलब्धियों का बखान अधमरे मन से किया गया क्योंकि स्वयं कांग्रेस और सरकार को पता है कि पूरे देश में छाई महंगाई और भ्रष्टाचार के वातावरण में किसी को भी इन उपलब्धियों पर विश्वास होने नहीं जा रहा है। लेकिन शब्द तो शब्द होते हैं, वह उनकी नाकामाबियों और अक्षमताओं को भी गुणगान की भाषा बना देते हैं जैसा कि हमने न्यायालयों में वकीलों की इन्हीं शब्दों के कारण झूठ को सच और सच को झूठ बनाते देखा है।

आज अभी हाल में हुए नीलसन सर्वे में भी पचास फीसदी से ऊपर लोगों ने यूपीए सरकार को आज तक की देश की भ्रष्टतम सरकार माना है, फिर भी यूपीए–II और कांग्रेस ने अपने दो वर्ष के शासनकाल में चाहे जो भी आत्मप्रशंसा के पुल बांधे हों, परन्तु अब देश को इन दोनों पर जरा भरोसा नहीं रह गया है। यहां उन कुछ सामयिक विषयों पर, जिनसे पूरी जनता त्राहि–माम करने को मजबूर हो गई हैं, कुछ चर्चा करेंगे।

महंगाई

यह एक ऐसा मुद्दा है जिस पर पूरे देश का आम और खास सभी आदमी प्रभावित हुआ हैं, केवल सत्ता में बैठे राजनीतिज्ञों और बड़ी कार्पोरेट कम्पनियों आदि को ही फर्क नहीं पड़ा है, क्योंकि ये सभी सरकारी खजाने पर बोझ हैं।

कांग्रेस ने दूसरी बार सत्ता में आकर जनता को गुमराह किया है और उसके साथ विश्वासघात किया है। याद कीजिए, कांग्रेस के घोषणापत्र को, जिसमें 100 दिन के अंदर महंगाई पर काबू पा लेने का वायदा किया था और आज 730 दिन गुजर जाने पर भी इस पर नियंत्रण पाना तो दूर, इसे आकाश तक पहुंचाने में भी कांग्रेस और उसके नेतृत्व में चल रही सरकार गौरव महसूस कर रही है क्योंकि उसे फख्र है कि हमने

तो देश की विकास दर 8.5 प्रतिशत तक बढ़ा दी। आम आदमी के लिए महंगाई से हुई बदहाली पर मौन रहना या फिर लगातार एक के बाद एक महंगाई कम करने की अवधियों को बढ़ाते रहना ही इस सरकार का काम रह गया है। पिछले इन दो वर्षों में उसने पहले 100 दिन में, फिर और आगे की कोई अवधि देकर जिसमें जून, सितम्बर, दिसम्बर और नवीनतम इस वर्ष की मार्च तक महंगाई कम करने का आश्वासन दिया। क्या कांग्रेस और इस सरकार को अपने झूठे वायदों पर जरा भी शर्म नहीं आती? अभी कल ही तो वित्तमंत्री ने फिर कहा है कि "मुद्रास्फीति का दबाव अभी जारी रहेगा।" क्या इन वायदों के पूरा न करने की निर्लज्जता की कोई सीमा है?

महंगाई के मामले में यूपीए सरकार को आम आदमी और यहां तक कि मध्यम वर्ग तक के लोगों की कोई फिक्र नहीं है। अनाज, साग–सब्जियों, पेट्रोल, रसोई गैस आदि सभी आवश्यक वस्तुओं पर जिस प्रकार का कहर इस सरकार ने ढाया है और देश की जनता को बर्बादी के किनारे पर लाकर खड़ा किया है, इसका उदाहरण स्वातंत्र्योपरांत शासन काल में मिलना मुश्किल है।

भ्रष्टाचार

आज, केवल कुछ प्रतिबद्ध कांग्रेसियों को छोड़कर हमारे देशवासियों का हर वर्ग यह कहने में नहीं हिचक रहा है कि कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार आज तक की सबसे भ्रष्ट सरकार है। बल्कि अगर यूं कहें कि सरकार और भ्रष्टाचार का चोली–दामन का साथ बन गया है। कभी राजीव गांधी ने स्वयं कहा था कि विकास में केवल 15 पैसे ही इस्तेमाल होते हैं और आज उन्हीं के सुपुत्र राहुल गांधी मानने को तैयार हैं कि यह तो पांच पैसे तक पहुंच गई है। फिर भी इस सरकार के सामने सिवाय 'चिंता जताने' के अलावा शासन में रहते हुए कोई उपाय करने की चिंता नहीं है। मात्र गिनाने भर के लिए 2जी स्पेक्ट्रम, राष्ट्रमण्डल खेल, आदर्श सोसाइटी, सड़ागला अनाज आदि को लें तो यही पता चलता है कि सब कुछ उसके शासनकाल में सरकार के सामने होता रहा और सरकार ने कभी भी इन भ्रष्टाचारों को स्वीकार नहीं किया, और जब सीएजी, शुगंलु समिति, सुप्रीम कोर्ट में सरकार को गहरी फटकार मिली तो गठबंधन की मजबूरियों का नाम देकर पीछा छुडाने की कोशिश की गई।

अपनी उपलब्धियों के गुणगान में विमोचित पुस्तक में सरकार दम भर रही है कि वह किसी भी बड़े से बड़े दोषी को भ्रष्टाचार के मामले में बख्शेगी नहीं। जरा इस सरकार के पिछले दो वर्षों का इतिहास देख लीजिए। 2जी स्पेक्ट्रम में स्वयं प्रधानमंत्री के कार्यालय में ए. राजा की हर गतिविधि की अनदेखी की गई जिससे देश के खजाने का 1,76,000 करोड़ रूपए का नुकसान उठाना पड़ा। अब कांग्रेसियों या सरकार का यह कहना कि उसने तो एनडीए सरकार की परम्पराओं को आगे बढ़ाया था। सरकार से यह पूछना वांछनीय होगा कि क्या वह सदैव एनडीए द्वारा तैयार नीतियों पर चलती रही है। उदाहरण के लिए उसने क्यों नदियों को जोड़ने की कल्याणकारी योजना को रसातल में पहुंचाया। यही नहीं मनरेगा आदि योजनाओं में भी ज्यों की त्यों अपनाने पर भी उसने अपनी मिट्टी ही पलीद कराई। राष्ट्रमण्डल खेलों में तो जितना भ्रष्टाचार फैला है, उसे देखकर न केवल देश बल्कि विदेशों में भी भारत की इस सरकार को भ्रष्टतम सरकार माना गया है। कलमाडी स्वयं और उनकी आयोजन समिति, खेल मंत्रालय, पीएमओ या यूं कहें कि स्वयं प्रधानमंत्री, दिल्ली की मुख्यमंत्री शीला दीक्षित आदि सब ने भ्रष्टाचार की गति को कई गुणा बढ़ा कर 70,000 करोड़ से भी अधिक की चपत लगा दी, फिर भी आज मुख्य मंत्री शीला दीक्षित पर कोई आंच तक नहीं आई है।

आज जिन भ्रष्टाचार के मामलों में ए. राजा, कनिमोझी आदि की गिरफ्तारी पर सरकार कह रही है कि यह पहली बार हुआ है कि भ्रष्टाचार के वीवीआईपी दोषियों को गिरफ्तार किया गया है, न जाने क्यों वह लोगों की आंखों में धूल झोंकना चाहती है। इसके पीछे केवल सुप्रीम कोर्ट की देखरेख में सीबीआई को दिए गए निर्देशों पर यह सब कुछ हुआ है वरना तो यूपीए सरकार ने सीबीआई एजेंसी को गृहमंत्रालय के अधीन मान कर कभी कुछ होने ही नहीं दिया।

कुशासन

मोटे तौर पर यहां महंगाई और भ्रष्टाचार को लिया है, परन्तु कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार के कुशासन और उसकी विफलताओं एवं अक्षमताओं के अनेकों प्रकरण अपनी दास्तां खुद बयां कर रहे हैं। देश की अर्थव्यवस्था स्वयं अत्यंत कुशल प्रधानमंत्री तथा उनके विशेषज्ञों के हाथों में रहते हुए भी भ्रष्टाचार के विशेष कारण से राजस्व और राजकोषीय घाटा इस हद तक बढ़ चला है, जिसमें पैसे की कोई कीमत नहीं रही। इससे गरीब आदमी को खाने के भी लाले पड़े हैं। कृषि क्षेत्र में किसानों की मेहनत से अपार विशाल भण्डार पैदा हुआ, परन्तु यह सरकार उनकी मेहनत की कमाई से उपजे अनाज को रखने के लिए गोदाम तक तैयार नहीं कर पाई। कितना बड़ा अनाज भण्डार नष्ट हो गया और यह सरकार सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बावजूद भी गरीब लोगों को भूख से मरने के लिए मजबूर कर रही है, परन्तु मुफ्त अनाज वितरण न करने की जिद पर अड़ी है, भला इससे बड़ी

शेष पृष्ठ 26 पर...

असंगठित क्षेत्रों के मजदूरों की समस्याएं दूर करेगा महासंघ

Hkkरतीय जनता मजदूर महासंघ की प्रथम राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक 16 मई 2011 को दिल्ली में आयोजित हुई। जिसका उद्घाटन भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि भाजमम श्रमिकों के आशा के अनुरूप कार्य करेगा। इस कार्यकारिणी में असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों की स्थिति पर विस्तृत चर्चा की गयी, जिसमें ठेका श्रमिक, बीड़ी–सिगार श्रमिक, चाय–बगान श्रमिक, डाक श्रमिक, भवन निर्माण श्रमिक, परिवहन श्रमिक, छोटे किसान, सीमान्त किसान, भूमिहीन किसान, खेत–मजदूर, बटाईदार, ईंट–भट्टा श्रमिक, मल्लाह–मछुआरा, जरी श्रमिक, जुट श्रमिक, घरेलू श्रमिक (महिला– पुरुष) खनन श्रमिक, आरा मिल, समाचार पत्र हाकर्स, तेल मिल, कपडा श्रमिक जैसे बुनकर, दर्जी, कारिगर, पल्लेदार, हम्माल, हाकर्स, सुरक्षा गार्ड आदि की समस्याओं पर चर्चा की गयी।

कार्यकारिणी ने स्वीकार किया कि असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के लिये कानूनी सुरक्षा की भारी कमी है तथा क्रियान्वयन के क्षेत्र में अत्याधिक समस्याएं हैं जिसके कारण श्रमिकों को कठिनाइयों का सामना करना पडता है। 28 अप्रैल 2011 को संसद मे दी गयी सूचना के अनुसार जो एन एस एस ओ के सर्वेक्षण पर आधारित है देश में 43 करोड 31 लाख असंगठित क्षेत्र के श्रमिक है।

देश के असंगठित क्षेत्रों के मजदूरों के लिये आदरणीय श्री अट्ल बिहारी वाजपेयी की सरकार में तत्कालीन श्रम

मंत्री स्व० श्री साहिब सिंह जी वर्मा ने सिफारिशें की यदि वो मुलतः कानून बन जाता तो ये विसंगतियां नहीं होती। यूपीए की सरकार ने उन सिफारिशों को नजर अन्दाज करके 2007–08 में जो कानून देश को दिया वह कानून असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के हितो की रक्षा नहीं करता है। इस कानून से गरीब के दर्द की चर्चा तो हो सकती है परन्तु उस दर्द को दूर नही किया जा सकता है, जैसे इस कानून के पारित होने के बाद बिना वित्तीय प्रबन्धन के राज्य सरकारों के द्वरा अनुपालन की सिफरिश की गयी है इसके दुष्परिणाम स्वरूप ये कानून दिखावा बन के रह गये है, कार्यसमिति यह मांग करती है कि केन्द्र की सरकार 2008 के असंगठित क्षेत्र के श्रमिक सुरक्षा कानून के अनुपालन के लिये वित्तीय प्रबन्धन सुनिश्चित करे। यूपीए सरकार असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों के साथ छल कर रही है। असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों कि यदि कर्मचारी भविष्य निधि पी.एफ. यदि काटी भी जाती है तो भी श्रमिक को कभी भी भुगतान नही मिलता है इसके लिये स्मार्ट कार्ड या बहु–आयामी पहचान पत्र जिसमे पी.एफ. नम्बर एवं अन्य महत्वपूर्ण जानकारिया हो उसकी नितांत आवश्यकता है।

भाजपा सरकारों ने इस क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है जैसे सनिर्माण असंगठित क्षेत्र के श्रमिक के लिये सेस एकत्रिकरण कल्याण बोर्डों की स्थापना, श्रमिकों के पंजीकरण की सरलतम व्यवस्था एवं घरेलू कामगार महिलाओं, रिक्शाचालकों के अतिरिक्त अन्य पंजीकृत श्रमिकों को पहचान पत्र आवन्टित करने का सराहनीय कार्य किया है, पंजी.त श्रमिकों को बीमारी ओर दुर्घट्ना बीमा की निशुल्क व्यवस्था है। भारतीय जनता मजदूर महासंघ इसकी सराहना करता है। सभा की अध्यक्षता भारतीय जनता मजदूर महासंघ के अध्यक्ष श्री प्रहलाद पटेल ने की।■

प्रशिक्षण है संगठन का ऑक्सीजन

l oknnkrk }kjk

Hkk जपा ने अपने प्रशिक्षण वर्गो में पढ़ाये जाने वाले विषयों की तैयारी के लिए एक राष्ट्रीय अध्ययन मंडल का गठन किया है। इसमें 26 विषयों का चयन किया गया है और हर विषय का प्रारूप तैयार करने के लिए 8 से 10 विशेषज्ञों की विषय समिति बनाई है।

इस राष्ट्रीय अध्ययन मंडल की पहली एक दिवसीय कार्यशाला 11 मई 2011 को दिल्ली में पार्टी के राष्ट्रीय कार्यालय में सम्पन्न हुई।

कार्यशाला को संबोधित करते हुए पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने पार्टी के विभिन्न स्तरों स्थानीय समिती से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक प्रशिक्षण की अनिवार्यता पर बल दिया और कहा कि दिल्ली में प्रबोधिनी जैसा एक बड़ा प्रशिक्षण संस्थान पार्टी मुख्यालय में बनना चाहिए। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण के 'प्रगत' एवं 'प्रवीण' वर्गों के लिए आज की राष्ट्रीय अध्ययन मंडल की यह कार्यशाला बहुत अच्छा एवं उपयोगी कदम सिद्ध होगी। प्रशिक्षण से पार्टी में ध्येय निष्ठा एवं अनुशासन का विकास होगा, कार्यकर्ताओं का कौशल बढ़ेगा, अंत्योदय एवं सुशासन के द्वारा हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकेंगे।

राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) श्री राम लाल जी ने अपने उद्घाटन भाषण में प्रशिक्षण के विषयों को गहराई से तैयार करने का आग्रह किया।

राष्ट्रीय प्रशिक्षण संयोजक आलोक कुमार ने दूसरे परन्तु महत्वपूर्ण सत्र की रूपरेखा बताते हुए कहा कि विषय समितियाँ अपने विषयों के बिन्दु तय करें उनके लेखन के लिए जिम्मेवारी लें और 15 जून से पहले सभी विषयों को तैयार करना सुनिश्चित करें।

आलोक कुमार ने बताया कि 30 जून 2011 तक 28 राज्यों में 25,000 कार्यकताओं का 'प्रवेश' प्रशिक्षण पूरा हो जायेगा। जुलाई से 'प्रगत' प्रशिक्षण प्रारम्भ होना है।

दूसरे सत्र में विषय समितियों की अलग–अलग बैठकें हुई, 2 घण्टे की इन बैठकों में अपने विषयों के प्रारूप बिन्दु तय किए गए, पढ़ाने के लिऐ कुछ उपयोगी उद्धरण, कथाएं संकलित की गई और अपने विषयों से जुड़े संदर्भ ग्रंथों की सूची बनाई गई।

श्री विनय सहस्त्रबुद्धे ने प्रशिक्षण में आधुनिक तकनीक के उपयोग पर बल देते हुए कहा कि जहां तक हो सके हमें अधिकतकर विषयों के 'पावर प्वाइंट प्रेजेंटेशन' तैयार करने चाहिए।

इस कार्यशाला में देश भर से आए हुए 117 वरिष्ठ नेताओं ने भाग लिया।

दूसरे सत्र में अपने विषयों का प्रारूप तैयार करने के लिऐ पार्टी के वरिष्ठ नेता जैसे राष्ट्रीय महामंत्री श्री जगत प्रकाश नड्डा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री मुख्तार अब्बास नकवी, श्री पुरूषोत्तम भाई रूपाला, श्रीमती नज़मा हेपतुल्ला, सुश्री किरण घई पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बंगारू लक्ष्मण, श्रीरामनाथ कोविंद, राष्ट्रीय प्रवक्ता श्रीमती निर्मला सीतारमण, श्री प्रकाश जावडेकर, राष्ट्रीय मंत्री श्री भूपेन्द्र यादव, श्री मुरलीधर राव, सुश्री आरती मेहरा, श्री के लक्ष्मण, सुश्री वाणी त्रिपाठी, भाजपा नेता डॉ. महेशचन्द शर्मा, श्री एल गणेशन, श्री राम नाईक, महिला मोर्चा की राष्ट्रीय अध्यक्षा श्रीमती स्मृति इरानी, प्रकोष्ठों एवं मोर्चों के राष्ट्रीय समन्वयक श्री महेन्द्र पाण्डे के अलावा अधिकतर प्रदेशों के प्रशिक्षण संयोजक, महिला मोर्चा एवं युवा मोर्चा के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने भी भाग लिया।

दिल्ली प्रदेश की प्रशिक्षण ईकाई के कार्यकर्ताओं ने सभी व्यवस्थाओं को सुचारू रूप से करने में अपना योगदान दिया।

जिन 26 विषयों के प्रारूप तैयार करने की प्रक्रिया इस कार्यशाला से प्रारम्भ हुई उसमें प्रमुखतः हमारी विचाारधारा, हमारी अर्थ दृष्टि, राष्ट्रीय सुरक्षा, अंत्योदय आदि से लेकर ई–इक्वीपमेंट कार्यपद्धति, व्यवस्था कौशल एवं सुशासन इत्यादी शामिल हैं। ■

कांग्रेस के लिये थोड़ी खुशी, ज़्यादा गम

सभी उपचुनाव जीते भाजपा ने

& vEck pj.k of'k"B

पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव परिणाम कहीं न कहीं भाजपा की आशाओं के अनुरूप नहीं रहे। हालांकि इन राज्यों में असम को छोड़कर भाजपा के पास कहीं पर किसी भी राज्य में एक भी सीट नहीं थी लेकिन उम्मीद तो यह जरूर थी कि केरल, तमिलनाडू, पश्चिम बंगाल में भाजपा का खाता खुलेगा।

भाजपा को जमीनी लड़ाई जमीन से लड़नी होगी। इन राज्यों में पार्टी के विस्तार और अनुकूल परिणाम के लिए संघर्ष की बानगी देनी होगी। संघर्ष की उस इबारत को लिखना होगा जिसे पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी ने लिखा है। कल क्या होगा, हम नहीं जानते पर पश्चिम बंगाल में ममता ने वामपंथियों के 34 वर्षों के रक्तरंजित इतिहास को धराशायी कर दिया। अपनी जान जोखिम में डालकर कार्यकर्ताओं को हौसले से भरकर ममता ने वामपंथियों की कब्र खोदी है, जिसे आज कोई अनदेखा नहीं कर सकता।

कहीं न कहीं भाजपा को आगामी वर्षों के लिए कठोर परिश्रम एवं अनवरत संघर्ष का सिलसिला चलाना होगा। ढिंढोरा तो कांग्रेसियों ने बहुत पीटा था पर तमिलनाडू में कांग्रेस समर्थित डीएमके और कांग्रेस दोनों की नाक कटी, वहीं प्रणब दादा चाहे अपनी जीत पर जितनी खुशी मना लें, ममता की खुशी से कांग्रेस के गम के आंसू नहीं पोंछे जा सकते। पश्चिम बंगाल में भी ममता की गोद में बैठकर कांग्रेस ने कुछ सीटें प्राप्त की है। अब यह तो कांग्रेस जाने। वो हंसे या रोए। बात करें कर्नाटक की, तो यहां भाजपा और मुख्यमंत्री बी. एस. येदियुरप्पा ने आरोप–प्रत्यारोप के झंझावात में कांग्रेस–देवेगौड़ा को दोनों गालों पर ऐसी राजनीतिक चपत दी है कि गाल सिर्फ लाल ही नहीं हुए वरन् गाल की लाली कालिख में बदल गयी। बात करें आंध्रप्रदेश की तो यहां भी कांग्रेस को ग्रहण लग गया। जगन की जीत भविष्य में आंध्रप्रदेश की राजनीति की ओर संकेत करती है जो कांग्रेस के वहां नेस्तनाबूद होने का आगाज कर रही है। बात करें पुडुचेरी की, वहां पर भी कांग्रेस ने मात ही खाई है। केरल में कांग्रेस कहने को तो जीत गई पर पश्चिम बंगाल में जिस तरह से वामपंथियों की विदाई समारोह हुई वैसी केरल में नहीं हो पाई। पांचों राज्यों के चुनाव परिणाम भाजपा और कांग्रेस दोनों के लिए समझने, बूझने और गुनने के लिए काफी है। इस पर विचार करने का समय आ गया है। हमने यहां पर पांचों राज्यों में हुए चुनाव का विश्लेषण करने की कोशिश की है। (सम्पादक)

पांच राज्यों की विधान सभाओं के चुनाव परिणाम भाजपा के लिये भी उत्साहजनक नहीं रहे। पर असम को छोड़ अन्य प्रदेशों में कुछ अधिक आशा भी नहीं थी। फिर देश के विभिन्न राज्यों में 8 विधानसभा और एक लोकसभा उपचुनाव में तो भाजपा ही छाई रही।

प्रतिदिन नये भ्रष्टाचार घोटालों के विस्फोट से ग्रसित कांग्रेस नीत यूपीए के लिये चुनाव परिणाम उसके चेहरे पर मुस्कान लाने के लिये काफी नहीं रहे। वह उसे खुशी कम और गम ज्यादा दे गये। उसने खोया तो बहुत है पर मन बहलाने के लिये इतनी तसल्ली अवश्य रही कि अभी तक सब कुछ नहीं खोया है। तीसरी बार अपने ही बल पर असम में सरकार बना लेने के समाचार ने उसे बहुत राहत दी।

केरल : सूई की नोक पर बहुमत

कांग्रेस नीत यूडीफ गठबन्धन सीपीएम नीत एलडीएफ गठबन्धन को हराकर सत्ता में आने में तो सफल हो गया पर बहुमत मिला उसे सूई की नोक का। 140 सदस्यों के सदन में उसके गठबन्धन को केवल 72 और स्वयं कांग्रेस को 38 सीटें ही मिली। पर इस जीत का सेहरा कांग्रेस नहीं स्वयं सीपीएम के सिर पर है जिसने स्वयं मुख्यमंत्री वी.एस. अच्युतानन्दन को हराने के लिये कोई कसर नही छोड़ी। अन्तिम क्षण तक तो सीपीएम के नेतृत्व ने जनता में ऐसा आभास दिया कि

अच्युतानन्दन को चुनाव लड़ने के लिये टिकट से ही वंचित किया जा रहा है। अन्ततः जब अन्तिम क्षण में उन्हें नामांकन दे दिया गया तो चुनाव के दृश्य एलडीएफ बनाम यूडीएफ न रह कर अच्युतानन्दन बनाम सीपीएम़कांग्रेस नीत यूडीएफ बनकर रह गया। अच्युतानन्दन फिर भी कांग्रेस की 38 के मुकाबले 45 सीटें जीतने में सफल रहे। एक हिन्दी दैनिक ने अपने समाचार में ठीक ही शीर्षक दियाः ''अच्युतानन्दन हार कर भी जीत गये''। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार प्रधानमंत्री डा0 मनमोहन सिंह, कांग्रेस अध्यक्षा श्रीमती सोनिया गांधी और श्री राहुल गांधी की चुनाव सभाओं में जनता की कमी आंख को स्पष्ट अखरती थी।

2009 के लोक सभा चुनाव में यूडीएफ ने 20 में से 13 सीटें जीत कर स्पष्ट संकेत दे दिया था कि जब भी विधान सभा चुनाव होंगे तो एलडीएफ की लुटिया तो डूब ही जायेगी। पर लगता है कि इन दो वर्षों में एलडीएफ ने अपनी स्थिति बहुत सुधारी और यूडीएफ ने बिगाड़ी। यूडीएफ को 72 सीटें प्राप्त हुई और एलडीएफ को 68। ऊपर से श्री अच्युतानन्दन ने कांग्रेस पर यह कह कर एहसान किया कि वह जोड़–तोड़ कर सरकार नहीं बनायेंगे और विपक्ष में बैठेंगे।

कांग्रेस ने केरल में सरकार तो बना ली है पर उसकी नैय्या की पतवार दो साम्प्रदायिक दलों के हाथ है जो उसे जिधर चाहे धकेल सकते हैं।

पश्चिमी बंगाल : गोद दीदी की

सुश्री ममता बैनर्जी ने साम्यवादियों के 34 वर्ष पक्के अभेद्य दुर्ग को ध्वस्त कर के रख दिया है। अपने ही बलबूते पर उनकी तृणमूल कांग्रेस ने 294 के सदन में 184 सीटें जीत कर प्रदेश की राजनीति में एक भूचाल ला दिया। उसने 227 सीटों पर चुनाव लड़ा था। तृणमूल व कांग्रेस गठबन्धन ने 228 सीटें जीत कर तीन–चौथाई से भी अधिक बहुमत प्राप्त कर लिया है। मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य समेत वाममोर्चा के 26 मंत्री चुनाव में धराशायी हो गये। यह असाधारण व आश्चर्यजनक विजय केवल दीदी और दीदी ही की थी। यह दीदी के वर्षों से चले आ रहे उस अनथक प्रयास और संघर्ष का ही परिणाम था जिसमें उसे कांग्रेस का कभी अप्रत्यक्ष और कभी प्रत्यक्ष समर्थन मिला। कांग्रेस तो दीदी के समर्थन में खुल कर दो वर्ष पूर्व ही आई जब साम्यवादियों ने कांग्रेस नीत यूपीए सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया।

यह भी कांग्रेस की ढुलमुल नीति का ही परिणाम था कि क्षुब्ध होकर सुश्री ममता बैनर्जी को कांग्रेस के विरूद्ध बग़ावत कर अपना अलग दल बनाने पर मजबूर होना पड़ा था। जब दीदी सिंगूर व नन्दीग्राम के किसानों पर साम्यवादी सरकार के अत्याचारों के विरूद्ध लाठियों खा रही थी तो उस समय कांग्रेस की जुबान पर ताला लगा रहा क्योंकि यूपीए की सरकार साम्यवादियों की बैसाखियों के सहारे ही चल रही थी। आज तृणमूल कांग्रेस अपने पैतृक दल को पीछे छोड़ एक अग्रणी दल बन बैठी है।

तमिलनाडू : दोनों की डूबी लुटिया

2जी स्पैक्ट्रम घोटाले की जो खिचड़ी कांग्रेस और डीएमके दोनों ने मिलकर पकाई थी उसका खामियाज़ा दोनों को तमिलनाडू के विधानसभा चुनाव में चुकाना पड़ा। अन्ततः दोनों की लुटिया डूब गई। डीएमके के 17 मन्त्रियों को हार का मुंह देखना पड़ा। कांग्रेस ने 63 सीटों पर चुनाव लड़ा था और उसे जीत मिली केवल 5 पर। 234 सदस्यीय विधानसभा में डीएमके के खाते बस 23 सीटें ही रह गईं। एआईएडीएमके ने 145 सीटें जीत कर सरकार बना ली।

केन्द्रीय गृह मन्त्री श्री पी. चिदम्बरम के अपने लोक सभा चुनावक्षेत्र में तो कांग्रेस व डीएमके का पूरा सफाया हो गया और एक भी सीट नहीं मिली।

पुडुचेरी : कांग्रेस सत्ताच्युत

कांग्रेस–डीएमके गठबन्धन पुडुचेरी में भी सत्ता से बाहर हो गया। श्री एन रंगासांमी जो 2008 तक इस केन्द्र शासित प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे उन्हें कांग्रेस आला कमान ने अपने पद से हटा दिया। उन्होंने एन आर कांग्रेस नाम से एक नये दल का गठन कर एआईडीएमके के साथ मिलकर चुनाव लड़ा और कांग्रेस–डीएमके दोनों ही को सत्ताच्युत कर दिया। उनकी पार्टी ने 30 सदस्यीय सदन में स्वयं 15 सीटें जीतीं और एआईडीएमके ने 5। कांग्रेस की झोली में पिछली बार की 10 सीटों से घट कर 7 रह गई और डीएमके की 7 के स्थान पर 2।

राहुल ब्रिगेड निकला खोखला

केरल व तमिलनाडू में स्वयं चयन कर युवा प्रत्याशी उतारने का श्री राहुल गांधी का प्रयास एक बार फिर विफल रहा। तमिलनाडू में कांग्रेस ने 63 सीटों पर चुनाव लड़ा था जिसमें 10 प्रत्याशी श्री राहुल द्वारा स्वयं चयनित थे। वह सभी भारी बहुमत से हारे। तमिलनाडू के प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष श्री के.वी. थंगकाबालू 30 हज़ार से भी अधिक मतों से विफल रहे। यह स्मरणीय है कि पिछले वर्ष ही श्री राहुल गांधी ने कांग्रेस को सशक्त कर अपने ही दम पर खड़ा कर देने की बात की थी जिस पर डीएमके की भौहें भी चढ़ गई थीं ।

बाकी राज्यों में भी राहुल के प्रत्याशियों की हालत बेहतर नहीं रही। केरल में 18 में से 8 ''अमूल बेबी'' जीत पाये और पश्चिम बंगाल में 8 में से केवल 3।

आंध्र में कांग्रेस की बुरी गति

शायद अब तक की सब से बड़ी

हार कांग्रेस को आंध्र के उपचुनाव में झेलनी पड़ी। कांग्रेस ने केन्द्र और प्रदेश सरकार की सारी शक्ति स्वर्गीय मुख्यमंत्री वाईएसआर रैड्डी के कांग्रेस विरूद्ध बग़ावत पर उतरे बेटे श्री जगनमोहन रैड्डी को कडप्पा लोक सभा चुनावक्षेत्र से व उनकी माता श्रीमती विजयलक्ष्मी को पुल्लीवेंदुला विधानसभा क्षेत्र से हराने के लिये एड़ी चोटी का ज़ोर लगा दिया। पर कांग्रेस को दोनों ही स्थानों पर एक शर्मनाक हार का सामना करना पड़ा। रैड्डी परिवार में ही फूट डालकर उसी परिवार के व्यक्तियों को उनके विरूद्ध खड़ा कर दिया गया। यहां तक कि जगन के विरूद्ध 10 जगन और विजयलक्ष्मी के विरूद्ध 6 उसी नाम की महिलाओं को खड़ा कर दिया गया ताकि सीधा–सादा या अनपढ़ मतदाता भ्रम में पड़ जाये।

पर कांग्रेस के सब हथियार काम न आये और श्री जगनमोहन रैड्डी 5,21,635 मतों से विजयी रहे। उन्होंने कांग्रेस व तेलगू देशम के प्रत्याशियों की ज़मानतें भी ज़ब्त करवा दीं। श्रीमती विजयलक्ष्मी 85,000 से भी अधिक मतों से विजयी रही।

एक दृष्टि से श्री जगनमोहन रैडडी की यह जीत तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री पी.वी. नरासिम्हा राव की 5,40,000 से भी अधिक बढ़त से विजय को मात दे देती है क्योंकि श्री राव ने चुनाव प्रधानमंत्री पद पर आसीन होकर एक कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में लड़ा था और उनके विरूद्ध तेलगू देशम ने भी अपना प्रत्याशी नही उतारा था जबकि श्री जगनमोहन ने कांग्रेस और तलगू देशम दोनों की ज़मानत जब्त कर दी है।

उपचुनावों में कांग्रेस को शून्य

विभिन्न राज्यों के आठ विधान सभा व छत्तीसगढ़ की एक मात्र लोक सभा सीट के लिये हुये उपचुनाव में कांग्रेस ने पाया कुछ नहीं, बस खोया ही है। कर्नाटक के चन्नापटना, जगलूर व बंगरपेट सीट से हुये तीनों उपचुनाव भाजपा ने जीते। इन में से दो सीटें पहले कांग्रेस के पास थीं और एक जनता दल (एस) के पास। छत्तीसगढ़ में बस्तर लोक सभा उपचुनाव में भी भाजपा ने यह सीट 86 हज़ार से अधिक की सम्मानजनक बढ़त से पुनः जीत ली।

सोनिया-राहुल ढिंढोरा गायब

पिछले दशक से जब भी कांग्रेस किसी चुनाव या उपचुनाव में जीतती थी तो इसका श्रेय सदैव मात्र श्रीमती सोनिया गांधी व उनके बेटे श्री राहुल गांधी को ही दिया जाता रहा है। जब हार होती तो ठीकरा स्थानीय नेताओं तथा पार्टी के सिर फोड़ दिया जाता रहा है। पर इस बार कहीं भी किसी भी विजय के लिये श्रेय का अलाप उनके नाम नहीं जपा जा रहा है। हैरानी की बात यह है कि उनके ढिंडोरची इस बार गायब रहे।

(लेखक भाजपा साहित्य एवं प्रकाशन प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक हैं) ■

पृष्ठ 21 का शेष...

निर्ममता और असंवेदनशीलता क्या हो सकती है? कृषि क्षेत्र में निर्यात और न्यूनतम मूल्य सम्बन्ध नीतियां भी इस सरकार की खतरनाक नीतियों का हिस्सा है। विदेशों में कालाधन देश में आने से पूरा देश समृद्ध हो सकता है, परन्तु यह सरकार कुछ भी करने को तैयार नहीं है।

और आइए, इस सरकार का मानना है कि विश्व में भारत का कद बढ़ना उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। शायद वह अमेरीका द्वारा मनमोहन सिंह की पीठ थपथपाने को मान कर अपनी सफलता का द्योतक मान रही है। अमेरिका एक व्यापारी देश है, वह अपने व्यापारिक हितों और राजनैतिक हितों के कारण किसी को भी पिट्ठू बना कर उसकी वाह–वाही कर सकता है। अन्यथा आतंक के मोर्चे पर अभी हाल में ही चिदम्बरम ने चीन और पाकिस्तान की मित्रता पर चिंता जताई है। सच यही है कि बात चाहे आतंक की हो, परमाणु संधि या अन्य विदेशी नीतियां हों, इस सरकार का कुशासन चीख–चीख कर उसकी नाकामियां गिना रहा है।

बातें कहने को अनगिनत हैं, जो इस भ्रष्टतम सरकार की दुर्बलताओं से आहत भारत देश को सहनी पड़ रही है। फिर भी यह सरकार कभी–कभी ऐसी कुछ बातों से प्रोत्साहित होती दिखती है कि कांग्रेस ही सत्ता में रहने का जन्मसिद्ध अधिकार रखती है। कांग्रेस देश का वह उच्छृंखल संगठन है, जिसने देश को विखण्डित किया है और देश के अलग–अलग प्रांतों में क्षेत्रीय पार्टियों को जन्म दिया। इसके पीछे अपने शासनकाल में अनुच्छेद 356 का प्रयोग रहा है। आज भाजपा उसका विकल्प है, तभी तो अकेले दम पर सत्ता करने का दम भरने वाली कांग्रेस आज गठबंधन सरकार की स्थिति में पहुंच गई हैं। यही कारण है कि कांग्रेस ने भले ही राज्यों में राज्यपालों को अपनी कठपुतली बनाकर भेजा हो, परन्तु अब वह कर्नाटक में श्री एच.आर. भारद्वाज द्वारा अनुच्छेद 356(1) के अंतर्गत भेजी विशेष राष्ट्रपति शासन की सिफारिश को मंजूर न करने पर विवश होना पड़ा है। बेहतर होगा कि कांग्रेस अपनी छद्म निरपेक्ष और वोट बैंक की नीतियों को छोड़कर देश के हित की बात सोचे। लोकतंत्र में वह विपक्ष के साथ विरोधियों का व्यवहार तो जरूर करे परन्तु शत्रुवत आचरण न करे। ■

अरुण जेटली ने राष्ट्रीय विधि आयोग बनाने की बहस छेड़ी

गत 15 मई 2011 का लखनऊ में सीएमएस डिग्री कॉलेज में अखिल भारतीय अधिवक्ता सम्मेलन (आल इण्डिया लॉयर्स कांफ्रेंस) के एक दिवसीय सत्र के समापन सत्र पर भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी ने देश में फैले भ्रष्टाचार के लिए प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह और यूपीए अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी को जिम्मेदार ठहराया है। इस सम्मेलन का आयोजन भाजपा विधि एवं विधायी प्रकोष्ठ ने किया था जिसमें देशभर से लगभग 2500 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

उन्होंने कांग्रेस–नीत यूपीए सरकार की सीबीआई द्वारा अपने गठबंधन दलों और राजनीतिक विराधियों के खिलाफ डराने धमकाने के उपयोग की कड़ी आलोचना की। श्री गडकरी ने यह भी कहा कि क्योंकि 2जी स्पेक्ट्रम और कॉमनवेल्थ खेलों के दोनों मामलों की फाइलें स्वयं डॉ. मनमोहन ने स्वीकृत की थी, इसलिए नैतिक रूप से वही इन घोटालों के जिम्मेदार हैं। समझ में नहीं आता कि प्रधानमंत्री क्यों चुप रहे और उन्हें क्यों पता नहीं चला कि कुछ गड़बड़झाला चल रहा है। स्पष्ट है कि 2जी स्पेक्ट्रम घोटाले के लिए केवल डीएमके को जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।

इससे पूर्व सम्मेलन का उद्घाटन राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरुण जेटली ने किया, जिन्होंने जजों की नियुक्ति के बारे में सिद्धांत बनाने की जरूरत पर जोर दिया। श्री जेटली ने यह भी सुझाया कि विधि प्रकोष्ठ को विभिन्न विधि मुद्दों पर पार्टी को सलाह और सहायता देनी चाहिए।

वरिष्ठ नेता श्री अरुण जेटली ने न्यायपालिका की विश्वसनीयता खोने पर भी चिंता व्यक्त की और कहा कि इसके लिए नेशनल जुडिश्यल कमीशन बनाने की गहन आवश्यकता है।

इस सम्मेलन में श्री अरुण जेटली का यह भी कहना था न्यायपालिका की विश्वसनीयता कायम रखने के लिए उक्त आयोग बनाना समय की आवश्यकता है। और यह भी कि सेवानिवृत्त जजों को सरकारी पद नहीं दिए जाने चाहिए क्योंकि इससे उनके अपने कार्यकाल में लिए गए निर्णय प्रभावित होते हैं। उन्होंने कर्नाटक में 16 विधायकों की अयोग्यता सम्बन्धी मामले को खारिज करने के सुप्रीम कोर्ट के निर्णय का उल्लेख करते हुए कहा कि जो लोग भाजपा अधिवक्ता प्रकोष्ठ से जुड़े हैं, उन्हें इन निर्णयों का अध्ययन करना चाहिए।

भाजपा राष्ट्रीय महासचिव (संगठन) ने विधि प्रकोष्ठ की गतिविधियों पर चर्चा करते हुए संगठनात्मक पक्ष पर जोर दिया और कहा कि प्रकोष्ठ को स्थानीय स्तर पर संगठनात्मक तंत्र तैयार करना चाहिए, जो विधि मुद्दों पर कारगर ढंग से काम करे। प्रकोष्ठ प्रभारी श्री सतपाल जैन ने प्रकोष्ठ की एक रूपरेखा प्रस्तुत की और प्रकोष्ठ की गतिविधियों के बारे में प्रतिनिधियों को अवगत कराया। भाजपा राष्ट्रीय सचिव श्री भूपेन्द्र ने विधि बिरादरी के समक्ष पारदर्शिता और चुनौतियों पर एक प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। भाजपा विधि प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय सह–संयोजक श्री बालासुब्रह्मण्यम कामारसू ने कार्यवाही का संचालन किया। ■

पाठकों से अनुरोध

राज्यसभा में विपक्ष के नेता व कानूनविद् श्री अरुण जेटली द्वारा राष्ट्रीय विधि आयोग बनाने की मांग पर पाठक अपनी टिप्पणी 'कमल संदेश' को भेज सकते हैं।

साहिब सिंह वर्मा से जुड़े 'प्रसंगों से जुड़ें'

दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री एवं पूर्व केन्द्रीय मंत्री स्व. डा. साहिब सिंह वर्मा के राजनीतिक और सामाजिक जीवन की विभिन्न गतिविधियों में अनेक लोगों से उनके नजदीकी संबंध रहे होंगे। स्वाभाविक है कि ऐसे लोगों के डा. वर्मा से जुड़े कुछ प्रेरणास्पद और हृदय को छू लेने वाले संस्मरण होंगे। डा. साहिब सिंह वर्मा स्मृति संग्रह मिशन ने यह निश्चित किया है कि डा. वर्मा से जुड़ी हर स्मृति का संग्रह किया जाएगा ताकि आने वाली पीढ़ी उनके समर्पित व्यक्तित्व से कुछ प्रेरणा प्राप्त कर सके। इसलिए मिशन ऐसे सभी सज्जनों का आह्वान करता है जिनके पास डा. वर्मा से जुड़ा कोई प्रेरणास्पद संस्मरण है। वे अपने संस्मरण 31 मई तक निम्न पते पर भेजें– श्री सुरेश श्रीवास्तव, डा. साहिब सिंह वर्मा स्मृति संग्रह मिशन, सी 7/84ए, केशव पुरम, दिल्ली–35,

फोन – 011–20000000 / 09013333333

ईमेल– sureshshrivastava7@gmail.com ■

सीमा के खतरों को अपने आँखों से देखेगा 'सीमा दर्शन दल'

Hkkरतीय जनता पार्टी संसदीय दल के अध्यक्ष व पूर्व उप प्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान द्वारा जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के 110वें जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित बार्डर दर्शन अभियान के पहले दस्ते को 14 मई 2011 को रवाना किया। यह दस्ता सरहद के खतरों के प्रति जनता को सजग करने और सैनिकों के सम्मान के लिए जागरूकता पैदा करेगा।

श्री लालकृष्ण आडवाणी ने नई दिल्ली स्थित अपने निवास पर इस दस्ते को तिरंगा थमा कर रवाना किया। इस मौके पर भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री (संगठन) सर्वश्री राम लाल, उत्तराखंड के मुख्यमंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक', भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष व पूर्व मुख्यमंत्री भगत सिंह कोश्यारी, भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री रविशंकर प्रसाद व डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शोध अधिष्ठान के निदेशक तरुण विजय सहित पार्टी के कई वरिष्ठ नेता उपस्थित थे। इस अभियान के पहले चरण में यह दस्ता उत्तराखंड के सीमावर्ती मुंशियारी क्षेत्र में जायेगा। अगले साल 17 अप्रैल को अभियान समापन कार्यक्रम देहरादून में होगा।

श्री आडवाणी ने कहा कि डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कश्मीर को भारत का अभिन्न अंग बनाए रखने के लिए बलिदान किया। उन्होंने कश्मीर में 1953 में परमिट प्रणाली के खिलाफ आंदोलन चलाया और उनकी रहस्यमय परिस्थितियों में वहां मृत्यु हो गई। इस घटना के बाद केंद्र ने कदम उठाए और अब वहां तिरंगा लहराने लगा है।

इस मौके पर श्री तरुण विजय ने बताया कि इस अभियान के तहत मुंशियारी, तवांग, पोर्ट ब्लेयर, ओखा, लाहुल स्पीति, उरी, नाथूला, मोइरांग, लक्षद्वीप जैसलमेर, बारा होती, चुसुल और देहरादून में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। श्री आडवाणी और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नितिन गडकरी समेत पार्टी के वरिष्ठ नेता इन कार्यक्रमों में भाग लेंगे। इस अवसर पर युवा फिल्मकार सुश्री प्रतिभा आडवाणी द्वारा निर्मित फिल्म 'वंदे मातरम्' भी प्रदर्शित की गई। ■

निवेशक प्रकोष्ठ

निवेश के लिए देश में माहौल नहीं : जेटली

भाजपा निवेशक प्रकोष्ठ की कार्यसमिति की बैठक नोएडा (उत्तर प्रदेश) में 8 मई 2011 को हुई। बैठक का निष्कर्ष था कि देश में निवेश सम्बन्धी वातावरण पूरी तरह से बिगड़ चुका है और निवेशक–अनुकूल नीतियों पर सरकार नहीं चल पा रही है। इंफ्रास्ट्रक्चर तथा महंगाई ही देश में निवेश की कमी का कारण बने हुए हैं। राज्यसभा में विपक्ष के नेता श्री अरूण जेटली ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि अब छोटे निवेशकों के लिए उभरते उद्यमों की बजाए अपनी धनराशि बैंकों में जमा कराना बेहतर हो गया है। उन्होंने यह भी कहा कि शेयरों में निरंतर ऊपर–नीचे की स्थिति को देखते हुए निवेशक बाजार से विमुख हो रहे हैं। ऐसी स्थिति में शायद ही किसी निवेशक को लाभ मिलता हो अन्यथा अधिकांश निवेशक नुकसान ही उठाते रहते हैं। उन्होंने निवेशकों से कहा कि उन्हें शेयर मार्केट और रियल एस्टेट, बल्कि विभिन्न बैंकों की योजनाओं के बारे में समुचित जानकारी प्राप्त करना बेहतर होगा। भाजपा निवेशक प्रकोष्ठ ने निवेशक अदालत का भी आयोजन किया जिसमें भाजपा राष्ट्रीय महासचिव श्री विजय गोयल, निवेशक प्रकोष्ठ के राष्ट्रीय संयोजक श्री अरूण कुमार सिंह और प्रांत संयोजक श्री महेश चौहान ने अनेकों निवेशकों की शिकायतें सुनी, जिनमें कुछ स्थानीय किसानों ने भी अदालत के सामने अपनी शिकायतें रखीं। अदालत ने आश्वस्त किया कि वह समुचित स्तर पर उनके मामलों को उठाएगी।■

पृष्ठ 17 का शेष...

संख्या में कार्यकर्ताओं ने रैली में भाग लिया। खरगौन में साईकिल रैली आयोजित की गयी। शहडोल में साईकिल रैली न्यू गांधी चौक से कलेक्टर चौराहा पहुंची। अंबेडकर चौराहे से साईकिल रैली शहर के विभिन्न मार्गों में पहुंची। बालाघाट भाजपा कार्यालय से होते हुए शहर के विभिन्न मार्गो से रैली गांधी चौक पर संपन्न हुई। सिवनी में साईकिल रैली का आयोजन किया गया। मंडला के पंडित दीनदयाल चौक से साईकिल रैली प्रारंभ होकर कलेक्टोरेट परिसर में संपन्न हुई। रतलाम में जिला पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने साईकिल रैली आयोजित कर मंहगाई का पुतला दहन किया। नीमच में सैकड़ो कार्यकर्ताओं ने साईकिल रैली में भाग लिया और पेट्रोल मूल्यवृद्धि का विरोध किया।

प्रदेश के सभी जिला मुख्यालयों पर साईकिल रैली आयोजित कर पेट्रोल मूल्यवृद्धि का विरोध किया गया।

कर्नाटक

भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओ ने विधायक की चंद्रकांत और सुश्री सीमा मसूति के नेतृत्व में पेट्रोल की बढ़ी

कीमतों के खिलाफ हुबली और धारवाड़ में धरना दिया और राज्य के विभिन्न भागों में ''रास्ता रोको'' आंदोलन को अंजाम दिया। उन्होंने कहा केन्द्र सरकार की इस वृद्धि से मुद्रास्फीति नहीं रूक पाएगी और आम आदमी की समस्याएं बढ़ेगी, अतः इसे तुरंत वापस लिया जाए।

ओडिशा

ओडिशा में भाजपा ने पेट्रोल वृद्धि के खिलाफ जोरदार आंदोलन छेड़ा और भारत की राष्ट्रपति को भाजपा ने ज्ञापन सौंप कर इस मनमर्जी और अतार्किक वृद्धि को वापिस लेने की मांग की। कार्यकर्ताओं ने भुवनेश्वर में साईकिल रैली का

आयोजन किया और अपनी मांग के समर्थन में धरना तथा राज्य के विभिन्न जिलों में मार्गों पर रास्ता रोका। यूपीए अध्यक्ष श्रीमती सोनिया गांधी और प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के पुतले जलाए गए। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री जुआल ओराम ने पांच राज्यों में विधानसभा चुनावों के बाद केन्द्र सरकार की इस वृद्धि की कड़ी आलोचना करते हुए कहा कि यह आज तक कि सबसे बड़ी वृद्धि है जो सचमुच लोकतंत्र का एक क्रूर मजाक है।

आंध्र प्रदेश

भाजपा के कार्यकर्ताओं ने पेट्रोल की बेहद बढ़े मूल्यों के विरोध में हैदराबाद, विजयवाड़ा, विशाखापत्तनम, तिरूपति, वारंगल और आंध्र प्रदेश के अनेकों शहरों तथा कस्बों में जोरदार आंदोलन छेड़ा। इस आंदोलन में प्रधानमंत्री तथा कांग्रेसनीत यूपीए सरकार के अनेक नेताओं के पुतले जलाए गए। हजारों कार्यकर्ताओं ने जगह–जगह पर 'रास्ता रोको' आंदोलन का सहारा लिया और यूपीए सरकार के पुतले का दाह किया। उन्होंने यूपीए सरकार से इतनी ऊंची कीमत करने और राज्य सरकार द्वारा इस पर लगाए गए 33 प्रतिशत बिक्री का भी विरोध किया और इसे तुरंत वापस लेने की मांग की। उन्होंने कहा पांच विधानसभाओं के चुनाव खत्म होते ही 24 घण्टे के अंदर ही आम आदमी पर बोझ डाल कर उसकी कमरतोड़ डाली है।

हरियाणा

हरियाणा में भी पेट्रोल में की गई वृद्धि का आंदोलन भाजपा ने बैलगाड़ी का इस्तेमाल करते हुए कहा कि यह सरकार हमें मध्यवर्गीय युग में ले जा रही है और इस वृद्धि से स्पष्ट है कि आम आदमी महंगाई से त्रस्त हो गया है। भाजपा की स्थानीय इकाईयों ने यूपीए मंत्रीगण और प्रधानमंत्री के पुतले भी फूंके। भाजपा कार्यकर्ताओं ने फरीदाबाद–मथुरा

मार्ग पर अजरण्डा चौक, हिसार, पानीपत, फतेहाबाद तथा राज्य के विभिन्न भागों में विरोध जताते हुए इस अपार वृद्धि को वापस लेने की मांग की।

उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री श्री रमेश पोखरियाल निशंक से केन्द्र की संप्रग सरकार की पेट्रोल वृद्धि की आलोचना करते हुए कहा कि इससे अन्य आवश्यक वस्तुओं पर भारी असर पड़ेगा और आम आदमी की जिंदगी मुहाल हो जाएगी। लगता है कि यूपीए सरकार गरीबों का खून चूसने में लगी है और वह पांच राज्यों में हुए हाल के चुनावों के खर्चे ब्याज सहित वसूल करना चाहती है। यह भी लगता है कि यह सरकार डीजल और रसोई गैस की कीमतें भी बढ़ाने में लगी है।

राजस्थान

पेट्रोल की बेतहाशा बढ़ोतरी को आम आदमी के साथ एक क्रूर मजाक बताते हुए भाजपा महिला मोर्चा की महिला कार्यकत्रियों ने जयपुर में इस वृद्धि को वापस लेने की जोरदार मांग की। प्रदेश मोर्चा की अध्यक्ष श्रीमती सरोज कुमारी के नेतृत्व ने महिलाओं ने साईकिल रिक्शा और बैलगाड़ी पर चल कर विरोध स्वरूप बड़ी चौपाड़ के इर्दगिर्द चक्कर लकाए। श्रीमती कुमारी और एक वरिष्ठ मोर्चा नेता श्रीमती सुमन शर्मा ने कहा कि लगता है कि केन्द्र सरकार और राज्य सरकार मुद्रास्फीति बढ़ाने के लिए एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में लगे हैं और कांग्रेस ने विधानसभा चुनावों में ईंधन पर 'वैट' हटाने का जो वायदा किया था, वह आज तक पूरा नहीं हुआ है।

उत्तर प्रदेश

भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री सूर्य प्रताप शाही ने कहा है कि पिछले दो वर्षों में केन्द्र की यूपीए सरकार के शासनकाल में 23 रूपयों की बढ़ोतरी हुई है जिससे निम्न वर्गों और मध्यवर्गीय लोगों का जीना मुहाल हो गया है। उन्होंने समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की केन्द्र में कांग्रेस–नीत–यूपीए सरकार को जन–विरोधी समर्थन देने पर

बड़ी निंदा की और कहा कि भाजपा इस मुद्दे पर निरंतर आंदोलन करती रहेगी।

महाराष्ट्र

19 मई को भाजपा कार्यकर्ताओं ने यूपीए सरकार की बढ़ी कीमतों पर अपनी टिप्पणी देते हुए कहा कि इस सरकार ने विधानसभा चुनावों के तुरंत बाद आम आदमी की पीठ में छूरा भोंकने का काम किया है और इसे तत्काल वापस लिया जाना चाहिए।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री सुधीर मुंगन्तीवर ने चांदपुर में तथा विधान परिषद में विपक्ष के नेता श्री पाण्डुरंग फुंडकर ने खामगांव में साईकिल रैली निकाली। उन्होंने कहा कि जब तक असम, केरल, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और पुडुचेरी में चुनाव नहीं हुए थे तब कि कांग्रेस को आम आदमी की चिंता थी, परन्तु चुनाव खत्म होते ही कांग्रेस–नीत–यूपीए सरकार ने 5 रूपए प्रति लीटर की बढ़ोतरी कर उसकी पीठ में छूरा भोंका है।

भाजपा के कार्यकर्ताओं ने मुम्बई के चर्च गेट के बाहर बैलगाडियों और साईकिलों की कतार बनाकर कार–मालिकों की बदहाली पर अपना विरोध जताया। इसी प्रकार के विरोध प्रदर्शन मुम्बई के अन्य 40 प्रमुख तथा उपनगरीय क्षेत्रों में भी किए गए। प्रदेश भाजपा प्रवक्ता श्री अतुल शाह ने कहा कि पेट्रोल की कीमतों में 10 जून 2010 से लेकर 15 मई 2011 तक दस बार वृद्धि हो चुकी है और हाल की वृद्धि भारतीय इतिहास में सबसे बड़ी है। ■